पवित्र शास्त्र के गुमनाम नायक

प्यारे भाईयों और बहनों,

आप सभी को नववर्ष की शुभकामनाएं। प्रार्थना करो इस वर्ष की शुरूआत और अन्त ऐसे हो कि हममें से हर एक के द्वारा परमेश्वर सामर्थ से अपना काम करे।

पवित्र शास्त्र के गुमनाम नायकों पर लिखे इस शान्त समय के किताब को पढ़ने की शुरूआत करने के लिये हम सभी तैयार हो रहे हैं। हम सभी नायक बनना पसन्द करते हैं, जिन्हें हर कोई देखता और सराहता है, लेकिन एक गुमनाम नायक कौन बनना चाहता है? इस महीने हमारी कलीसियाओं के परिवार के सभी 6000 शिष्य पवित्र शास्त्र के कुछ स्त्री और पुरूषों के बारे में पढ़ेंगे जो अब्राहम, मूसा, यहोशु और दाऊद जैसे जाने-माने और प्रसिध्द नहीं थे फिर भी इन्होंने गहरा प्रभाव डाला। उनका जीवन, विश्वास और संघर्ष हमें प्रेरित कर उनकी नकल करने का आवाहन देगा। उनके बारे में पवित्र शास्त्र में पढ़कर उनके जीवन पर मनन करने और प्रतिदिन व्यवहारिक रूप में एक काम; जिसके लिये पवित्र आत्मा आपको प्रेरित करे, उसे करने का प्रोत्साहन मैं आपको देना चाहता हूँ।

मेरी प्रार्थना है कि जिस तरह से उनके जीवन ने परमेश्वर के राज्य के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उसी तरह हम भी उनके राज्य को बनाने के लिये एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं चाहे हमारे बारे में कुछ लिखा जाए या नहीं या फिर हमें कोई याद रखे या नहीं। हमें जिस बात की इच्छा रखनी है, वो यह नहीं कि इस दुनिया के लोग हमारे बारे में क्या बातें करेंगे परन्तु यह कि स्वर्ग में स्वर्गदूत हमारे बारे में क्या बातें करेंगे। होने दो कि परमेश्वर पवित्र शास्त्र के इन गुमनाम नायकों के जीवन का उपयोग हम पर प्रभाव डालने के लिये करे और बदले में यीशु के लिये इसका प्रभाव हमारे परिवार, पड़ौसी, शहर और हमारे देश पर पड़े। यीशु के लिये आप सभी 6000 लोग नायक हो!

यीशु के प्रेम में
दिनेश जॉर्ज

दिन 1 - बसलेल

01-01-2016

निर्गमन 35:30-36:5

परमेश्वर की महिमा के लिये चुना हुआ

हमने व.३०-३३ में यह पढ़ा कि, इस व्यक्ति बसलेल को परमेश्वर ने चुना था, और परमेश्वर ने उसे अपनी आत्मा, और कौशल, बुद्धि, समझ और ज्ञान से भरा है।

हम भी परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं, सन्सार की सृष्टि से पहले ही परमेश्वर ने अपने हाथों से हमें चुना (**इफि.1:4**) कि हम भलाई के काम करें जो पहले से ही उसने हमारे करने के लिये तैयार किया है।(**इफि.2:10**)

क्या हमें अपने बुलाए जाने पर शक है? कई बार ऐसा समय भी आता है जब हमें महसूस होता है कि हम चुने हुए नहीं हैं, हम बेकार हैं, और कुछ भी अच्छा करने के योग्य नही हैं। खैर शास्त्र कुछ और कहता है। यदि आज आप परमेश्वर के राज्य में हैं तो इसलिये हैं क्योंकि आपको विशेष रूप से चुना गया है। चुने जाने और मसीह के द्वारा शुध्द किये जाने के बाद आपको भी परमेश्वर के पवित्र आत्मा से भरा गया। उनका आत्मा कलीसिया को मजबूत बनाने के लिये हमारे वरदानों का उपयोग करने और उनकी महिमा करने में हमें सक्षम बनाता है। (**1कुरू.7:11, रोमियों 12:6-8, 1पतरस 4:10-11 पढ़ो**)

दूसरों तक पहुँचाना

वचन 34 कहता है कि परमेश्वर ने बसलेल और ओहोलीआब दोनों को दूसरों को सिखाने की क्षमता दी। परमेश्वर के लिये यह बात महत्वपूर्ण थी कि वे अपनी योग्यता और विशेषता दूसरों तक पहुँचाएं और उन्हें परमेश्वर की सेवा के लिये लैस(तैयार) करें। क्या आज हमें भी यही करने के लिये नहीं बुलाया गया? उन्होंने आपको कौनसी क्षमताएं प्रदान की हैं? क्या वह है- गायकी, सेवा, के के सी में सिखाना टीन्स, प्री टीन्स, कॉलेज, प्रचार, पवित्र शास्त्र सिखाना, सबक तैयार करना, अनुवाद, रचनात्मक और कलात्मक क्षमता, पाक कला, प्रोत्साहन देना, प्रशासन, कार्यक्रमों का आयोजन,....क्या यह सब आप उनके राज्य के लिये उपयोग कर रहे हैं? क्या आप औरों को बुलाकर उन्हें शिक्षण और प्रशिक्षण दे रहे हैं?

विश्वसनीय और जिम्मेदार सेवक

निर्गमन 38:23-23 हमें बताता है कि बसलेल और ओहोलीआब ने परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार सबकुछ किया। **निर्गमन 35:4-5** में हम देखते हैं कि उन्होंने अपने काम की प्रगती की सूचना दी और जिन बातों की मूसा आवश्यक्ता थी ठीक वही बात उन्होंने लोगों को बताई। परमेश्वर के कामों में क्या आप विश्वासयोग्य हैं? क्या आप ईमानदारी से निर्देषों का पालन करते हैं, और बातों को स्पष्ट और लगातार बताते रहते हैं कि परमेश्वर का काम सुचारू रूप से हो पाए?

उपयोग:

1. किस आश्चर्यजनक रूप से परमेश्वर ने आपका रूपांतरण किया और किस रिती से इन बातों की व्यवस्था की, इसे याद करते हुए, आपको चुनने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना कर उनका धन्यवाद करो।
२. अपने मसीही जीवन में आत्मा के वरदानों को पहचानो, और लिखो कि आपका और अधिक उपयोग करने के लिये आप परमेश्वर को कैसे अनुमति दोगे। किन मायनों में आप और अधिक विश्वासयोग्य रहोगे?
३. प्रार्थना करो और बात करके किसी से मिलने का समय निर्धारित करो जिसे आप वो सीखा और दे सकते हो जो आपने सीखा है।

दिन 2 - पीनहास

02-01-2016

गिनती 25

पृष्ठभूमि:पीनहास हारून का पोता और एलीआजार का पुत्र है। मिस्री लोगों की दासता से बचाए जाने के बाद इस्राएली वाचा की भूमि की ओर जा रहे थे। परमेश्वर का हाथ उनपर था और जिस भी राष्ट्र से होकर वो गुजरे वह राष्ट्र भयभीत हो गया। उनमें से एक राष्ट्र था मोआब। मोआब के राजा बालाक ने इस्राएल को श्राप देने के काम के लिये बिलाम को रखा, लेकिन जब भी बिलाम इस्राएल को श्राप देने के लिये अपना मुंह खोलता तो श्राप के बजाए उसके मुंह से आशिर्वाद ही निकलता। तब बालाक ने मोआबियों से कहा कि वे बालपोर देवता की पूजा के द्वारा इस्राएलियों को लुभाएं। उसने इस्राएलियों को बहकाकर मूर्तिपूजा कराने के लिये सबसे सुन्दर स्त्रियों को भेजकर उनको प्रलोभित करने की सलाह दी। यह रणनीति काम कर गई और जल्द ही अनेक इस्राएली बहक गए।

अनुछेद का अध्ययन: मोआबियों के द्वारा बहकाए जाने के बाद इस्राएली इन सारे पापों में गिरे: वे व्यभिचार करने लगे। उनकी मूर्तियों को जो बलि चढ़ाए जाते वे उसमें भागी बने। उन्होंने बलि का मांस खाया। वे उनके देवताओं को दण्डवत् करने लगे। इस तरह वे बालपोर देवता को पूजने लगे और परमेश्वर का क्रोध उनपर भड़का।

परिणाम: एक महामारी भड़क उठी और उस दिन 24000 इस्राएली मारे गए।

हममें से कुछ यह प्रश्न कर सकते हैं कि; क्या हमारा प्रेम करनेवाला परमेश्वर इतना क्रोधित होकर हमारे साथ ऐसा बर्ताव कर सकता है?

यह पूरी तरह से एक अलग अध्ययन है।
प्रेम जो बुराई से नफरत नहीं करता पवित्र-शास्त्र के अनुसार वह प्रेम - प्रेम नहीं है। किसी ने कहा है कि, "इसिलिये यह उचित है कि परमेश्वर के प्रेम पर लिखी जाने वाली एक किताब में परमेश्वर के क्रोध पर एक निबंध भी लिखा जाना चाहिये"।

जो लोग इस पाप में गिरे उनके इस पाप को दिन के उजाले में बेनकाब कर उनके अगुवों को मार डालने की आज्ञा परमेश्वर ने मूसा को दि। इस्राएल की सारी मंडली मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बैठकर रो रही थी। इसी बीच
साल का पुत्र जिम्री जो शिमौनी प्रधान था मूसा और सारी मंडली की आंखों के सामने कोजबी नामक एक मिद्यानी स्त्री जो मिद्यानी लोगों के एक घराने के प्रधान की बेटी थी उसे अपने साथ ले आया। जब पीनहास ने यह देखा तो अपने हाथ में एक भाला लेकर मंडली से बाहर आया और जिम्री के तम्बू में घुस गया। और जिम्री और कोजबी दोनों के पेट भाला घोंप दिया। यह दोनों एक प्रभावशाली परिवार से थे इस बात को जानते हुए भी पीनहास ने उन्हें मार डाला। इसके बाद ही जो महामारी इस्राएलियों में फैली थी, थम गई।

जिम्री के पाप की गहराई क्या थी? जिम्री को सज़ा क्यों दी गई?
जिम्री वास्तविकता से बहूत दूर था। इस्राएलियों के खिलाफ परमेश्वर का क्रोध भड़क रहा था और महामारी के कारण पहले ही 24000 इस्राएली मारे जा चुके थे। मूसा इस्राएल के पुरखों के साथ एक सभा में व्यस्त था। मिलापवाले तम्बू के सामने बैठकर लोग रो रहे थे, लेकिन जिम्री पर पाप का और उस पाप से मिलने वाले आनंद का जुनून सवार था। मूसा की आंखों के सामने वह उस स्त्री को तम्बू में ले गया (अधिकार के खिलाफ एक खुला अनादर)।

पाप हमारे साथ यही करता है। क्या ऐसा कोई पाप है जिसका जूनून आसपास की सच्चाई को देखने से आपको रोक रहा है?

कौनसी बात पीनहास को आज के अध्ययन का नायक बनाता है?

वह वास्तविकता के संपर्क में था। परमेश्वर जो महसूस कर रहे थे पीनहास भी वही महसूस कर रहा था।

देखो, परमेश्वर ने पीनहास के बारे में मूसा को क्या गवाही दिया। **"पीनहास जिसे इस्राएलियों के बीच मेरी सी जलन उठी, उसने मेरी जलजलाहट को उन पर से यहां तक दूर किया है कि, मैंने जलकर उनका अन्त नहीं कर डाला"।**

आपको किसके सम्मान की ज्यादा चिन्ता है? कई बार ये हो सकता है कि परमेश्वर के सम्मान के बजाए हम अपने सम्मान के बारे में सोचें। यदि हम अपने सम्मान के बारे में सोचें तो संसार की नज़रों में हीरो हो सकते हैं परन्तु परमेश्वर की नज़रों में ज़ीरो होंगे।

परमेश्वर के सम्मान की चिन्ता ने पीनहास को एक हिरो बना दिया। पीनहास को अपने सम्मान से ज़्यादा परमेश्वर के सम्मान की चिन्ता थी। इसीसे उसे परमेश्वर का वरदान विरासत में मिला। वह और उसके वंशज के लिये सदा के याजक पद की वाचा।

यदि हम आज अपने जीवन में खुद को सम्मानित करने के बजाए परमेश्वर को सम्मानित करने का चुनाव करते हैं तो, यही प्रतिज्ञा हमारे लिये भी लागू हो सकती है।

उपयोग:

परमेश्वर की कैसी छवी आज आप देखते हो?

वो कौनसी ऐसी बातें हैं जिसका जूनून आप पर ऐसा सवार है कि सच्चाई से आंखें मून्द कर आप परमेश्वर का अनादर कर रहे हैं?

यदि आप परमेश्वर को अपने से अधिक सम्मान देना चाहते हैं तो कौनसे व्यवहारिक कदम उठाने की आवश्यक्ता है?

दिन 3 - याएल

03-01-2016

न्यायियों 4:17-24

एक भीषण युध्द का दृष्य है। दुश्मन की हार हो रही थी और हारने वाली सेना का सेनापति सीसरा भाग जाता है। वह भागकर केनी हेबेर की पत्नि याएल के तम्बू में चला जाता है। उसने सोचा कि छुपने के लिये यह एक सुरक्षित जगह है और यहां पकड़े जाने से बचा जा सकता है।

केनी गोत्र के लोग इस्राएलियों के सहयोगी थे, फिर भी हासोर के कुल और याबीन जो दुश्मन सेना थी इनमें दोस्ती थी। याएल ने अपने पती के विपरीत अपने आप को इस्राएलियों के प्रति वफादार रखा, और इस बात को उसने अपने तक ही रखा।

सीसरा को उसकी वफादारी पर शक करने का कोई भी कारण नहीं था। अपने एक वफादार दोस्त की पत्नी की मौजूदगी में वह कोई खतरा महसूस नहीं कर रहा था। लड़ाई की थकान, और पूरी तरह थका हुआ, अपनी जान बचाने के लिये भागकर आया हुआ, आखिरकार वह आराम कर सकता था क्योंकि वह एक ऐसे व्यक्ति के साथ था जिसपर वह भरोसा करता था, तो उस पर कौनसी मुसिबत आ सकती थी।

एक कर्तव्यपरायण, अतिथी सत्कार करने वाली, सम्मान देने वाली और ध्यान रखनेवाली प्रिय पत्नी, फिर भी उसके अन्दर एक भयंकर प्रतिबध्दता और वफादारी भरी थी, जिसके कारण परमेश्वर के लोगों को जीत दिलाने के लिये परमेश्वर के अद्भुत योजना में निर्विवाद आज्ञाकारिता और एक अपरंपरागत भूमिका निभाने के लिये उसे शामिल किया गया।

उसके लिये उसका मकसद स्पष्ट था और वह अपनी जिम्मेदारी को बहुत अच्छी तरह से समझती थी। उसने एक महत्वपूर्ण समय में साहस और बहादुरी का प्रदर्शन किया और अपना कर्तव्य पूरा करने में डगमगाई नहीं। इस समय तक इस स्त्री याएल को कोई नहीं जानता था, जो अपने परीवार का ध्यान रखती और एक आम इन्सान की तरह साधारण जीवन बिता रही थी।

हालांकी इस्राएल के इतिहास में एक विशेष भूमिका और उद्देश्य के लिये परमेश्वर उसे तैयार कर रहा था। जो बातें परमेश्वर ने उसके मन कें करने के लिये डाली थीं उन्हें पूरा करने में वो बिलकुल भी नहीं हिचकिचाई। परमेश्वर के मकसद को पूरा करने के लिये हमें किसी भूमिका या ओहदे की ज़रूरत नहीं है। हम सभी में अच्छाईयां और प्रतिभाएं हैं जिनका उपयोग हम परमेश्वर के लिये कर सकते हैं। उन दिनों में स्त्रियां तम्बू गाड़ने का काम किया करती थीं और याएल तम्बू के कीलों को ज़मीन में ठोकने में बहुत माहिर थी। जिस बात को करने में वो माहिर थी, परमेश्वर के लोगों को विजय दिलाने में उसने उसी बात को बड़े अच्छे तरीके से किया। एक छोटी प्रतिभा, उपयुक्त समय पर त्वरित निर्णय ने परमेश्वर के लोगों को पूरी जीत दिलाई। कोई आकर उसके लिये यह काम करे इसका उसने इंतजार नहीं किया। वह बाराक का इंतजार कर सकती थी कि वह आकर इस काम को पूरा करे, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। वह एक तुरन्त विचार करने वाली स्त्री थी और उसके सामने आए अवसर को उसने तुरन्त पकड़ लिया।

न्यायियों 5:24-27

परमेश्वर के सम्मान में अपने गीत में दबोरा ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिये याएल को धन्य कहा।

याएल की तरह परमेश्वर के लिये डटकर खड़े होने के लिये आपके परीवार में यदि आप अकेले ही होते तो, क्या आप यह करोगे या डर जाओगे और दूसरे जो कर रहे हैं आप भी वही करने लगोगे?

क्या आपके जीवन में कभी ऐसा समय आया जब आपके करीबी जैसे, आपके पती/पत्नी, भाई-बहन, आपके दोस्त या आपके मार्गदर्शक ने किसी अधार्मिक बात का चुनाव किया? आपकी प्रतिक्रिया कैसी थी? क्या आप उसके विरोध में डटकर खड़े रहे? यदि नहीं तो क्या कारण था?

यदि एक अपरंपरागत भूमिका निभाने के लिये परमेश्वर आपको बुलाते हैं तो क्या आप असंमजस में पड़ोगे या सन्देह करोगे? कुछ ऐसा जो जोखिम से भरा हो, कठीन हो, खतरनाक और आपकी क्षमता से परे हो तो आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? क्या आप आज्ञाकारिता के साथ प्रतिक्रिया करोगे या फिर इसमें परमेश्वर की बुध्दिमानी पर प्रश्न खड़ा करोगे?

जब आपके सामने कोई मौका आता है तो क्या आप तुरन्त उसे करने के लिये तैयार होते हो या फिर किसी और का इंतजार करते हो कि वह आगे आकर यह काम करे और आप सुरक्षित रहें?

क्या आप अपनी प्रतिभा का उपयोग परमेश्वर को सम्मानित करने के लिये करते हो?

याएल ने एक असाधारण काम किया जो आम तौर पर एक स्त्री के लिये करना आसान नहीं है। उसे धन्य कहा गया। हमें भी कभी भी, कहीं भी, किसी भी तरह परमेश्वर के बुलाहट को सुनने के लिये तैयार रहना है, ताकि जीत प्रभु का हो।

दिन 4 - बोअज

04-01-2016

1तीमुथियुस 5:2

जवानों को भाई, बूढ़ी स्त्रियों को माता और जवान स्त्रियों को पूरी पवित्रता से बहिन जानकर समझा। इस वचन के लिखे जाने से पहले ही बोअज इस वचन के अनुसार जिया। उसने नाओमी से अपनी माता जैसा और रूत से पवित्रता का बर्ताव किया। वह एक ऐसा व्यक्ति था जिसपर कमज़ोर स्त्री भी भरोसा रख सकती थी। हम एक ऐसे सन्सार में जी रहे हैं जहाँ असुरक्षित लोगों का लोग फायदा उठाते हैं। लेकिन बोअज लोगों का आदर और सम्मान करने में बहुत ऊपर और बहूत आगे था।

1. बोअज अनुकरण के योग्य एक व्यक्ति

वह एक ऐसा व्यक्ति था जिससे हम अपनी बेटी का विवाह करवाना चाहेंगे, और जिसकी नकल हमारे दामाद भी करें ऐसा व्यक्ति था।

रूत 2:8-9

बोअज ने रूत के बारे में पूच्छा तो यह पाया कि वह एक परिश्रमी स्त्री है और उसने अपनी सास का साथ कभी नहीं छोड़ा। यह जानकर कि वह डर जाएगी उसे सुरक्षित महसूस कराने के लिये उसने मोह भरे शब्दों का उपयोग कर उसे मेरी बेटी कहकर पुकारा। इन बातों के कारण उस समय रिश्तों की सिमाएं बन्ध गईं। अपने शब्दों के द्वारा उसने उसे यह बातें महसूस कराईं:

सुरक्षित: यहाँ रहो और दूसरी औरतों के साथ मिलकर काम करो।

संरक्षित: दूसरे पुरूषों से-उसे शायद दूसरे पुरूषों पर सन्देह था, पर इस बात को जान लो कि कोई भी उस पर हाथ नहीं डाल सकता था।

आदर: सारी बातों को गहराई से सोचकर और उसे यदि प्यास लगे तो क्या करना है इस बात पर विशेष दिशा देकर।

रूत 2:22-23

नाओमी ने यह जाना कि बोअज एक अच्छा इंसान था, जो अपनी जिम्मेदारियों का आदर करता था। वह इस बात के लिये आभारी थी और दूसरी स्त्रियों के करीब रहने की बोअज की सलाह का पालन करने का रूत से आग्रह किया।

विचार करो: बोअज की आत्मा और हृदय की नकल करने के लिये मुझे क्या करना चाहिये?

2. बोअज: उसका जीवन उसके सिध्दान्तों से मेल खाता था

रूत 3:7-13

रात का समय था और बोअज ने देखा कि रूत उसके पैरों के पास सोई है। युवा पुरूषों के पीछे न जाने लिये बोअज उसकी सराहना करता है और उसे एक आदर्श चरित्रवाली स्त्री कहकर संबोधित करता है। अपने बातों के अनुसार वह एक सीमा में बन्धा रहा। बोअज के बारे में यह क्या दर्शाता है?

- अपने संकल्प में वह बना रहा।
- उसने परिस्थितियों को अपने ऊपर हावी होने न दिया और न ही उन परिस्थितियों को समझौता करने के एक बहाने के रूप में उपयोग किया।
- वह जानता था कि नाओमी और रूत संघर्ष कर रहे हैं, उसने उसे छ: गुना अधिक जौ देकर आशिषित किया।
- उसकी धार्मिकता ने विधवाओं की रक्षा करनेवाले परमेश्वर में उनके विश्वास को और मजबूत किया होगा।

रूत 4:13-16

इस किताब के शुरूआत में नाओमी निराधार थी जैसे अन्त निकट आता है नाओमी अपने हाथों में एक बच्चे को थामे है। उसने इस बात को जाना और बोअज और नए बच्चे ओबेद के लिये परमेश्वर की महिमा की। यह कोई साधारण बेटा न था। ओबेद के माध्यम से हम यीशु को इस धरती पर आता देखते हैं।

विचार करो: इसी के समान कैसे मेरा उदाहरण लोगों के जीवन पर प्रभाव और असर डाल सकता है?

05-01-2016

दिन 5 - हन्ना

1शमूएल 1:1 - 2:21

हन्ना का जीवन न्यायियों के शासनकाल के समय का है। यह एक ऐसा समय था जब लोगों को जो अच्छा लगता वो वही करते (**न्यायियों 21:25**)। एल्काना जो एक लेवी था (**1इति. 6:27**) हर साल वह और उसका परिवार रामातैमसोपीम से शीलो, जो राष्ट्र का धार्मिक केंन्द्र था, वहाँ पर परमेश्वर के निवासस्थान (मिलापवाले तम्बू) पर दण्डवत् करने और मेलबलि चढ़ाने जाता था। एल्काना की दो पत्नियों में से एक थी हन्ना, जिसके कोई बच्चा नहीं था। कई वर्षों तक उसकी दूसरी पत्नी पनिन्ना उसका इस हद्द तक उपहास करती थी कि हन्ना इतना रोती कि उसे भोजन भी नहीं कर पाती थी। हालांकि हम दूसरों को हमें चोट पहुंचाने से हम नहीं रोक सकते लेकिन उनके प्रति हमारी प्रतिक्रिया कैसी होगी इसका चुनाव हम ज़रूर कर सकते हैं।

हालांकि प्रभु ने उसकी कोख बन्द कर रखी थी (**1:5**), फिर भी उसका दिल परमेश्वर की और खुला था। **1शमूएल1:10 - हन्ना मन में व्याकुल होकर प्रभु से प्रार्थना करने और बिलख-बिलखकर रोने लगी। याजक उसे गलत समझ बैठा।**

वचन 13 - हन्ना मन ही मन कह रही थी; उसके ओंठ तो हिलते थे परन्तु उसका शब्द न सुन पड़ता था। इसलिये एली ने समझा कि वह नशे में है। हन्ना के पास निराश होने और कड़ुवाहट से भरने का अच्छा कारण था, परन्तु उम्मीद छोड़ देने के बजाए वह प्रार्थना करती रही। उसने इमानदारी से अपनी समस्या को परमेश्वर के सामने रखा। उसने परमेश्वर पर भरोसा करके अपने हृदय को उसके सामने उंडेल दिया।

हम उसके बर्ताव में पूर्ण बदलाव देखते हैं। **1:18** में वो कहती है, **उसने कहा,"तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाए।" तब वह स्त्री चली गई और खाना खाया, और उसका मुंह फिर उदास न रहा।** कई वर्षों तक कोई परिणाम न देखने के बाद भी हन्ना ने अपनी आशा क्यों नहीं खोई? वह परमेश्वर से नाराज़ और कटु हुए बिना दृढ़ कैसे रह पाई? उसने क्यों अपने पति पर दोष नहीं लगाया और न ही पनिन्ना से झगड़ा किया? याजक एली के प्रति उसके मन में बुरे विचार क्यों नहीं आए?

जब परमेश्वर ने उसकी मन की इच्छा को पूरा किया इसके बाद वह कैसे परमेश्वर की सेवा के लिये एली के देखरेख में वह वापस उसे प्रभु को कैसे सौंप सकती थी?

इसका उत्तर हमें उसकी प्रार्थनाओं में मिलेगा। जिस परमेश्वर की वह आराधना करती थी उसे वह बहुत अच्छी तरह से समझती थी। वह अपने परमेश्वर को जानती थी।

प्रभु के तुल्य कोई पवित्र नहीं (**2:2**), प्रभु ज्ञानी परमेश्वर है, और कामों को तौलनेवाला है (**2:3**), प्रभु मारता है और जिलाता भी है (**2:6**), प्रभु निर्धन करता और धनी भी बनाता है (**2:7**), पृथ्वी के खम्भे प्रभु के हैं, और उस ने उन पर पृथ्वी की नींव रखी है (**2:8**), वह अपने भक्तों के पैरों को सम्भाले रहेगा (**2:9**), प्रभु पृथ्वी के छोर तक न्याय करेगा (**2:10**)।

हालांकि एली के बेटे दुष्ट व्यक्ति थे, शमूएल बालक बढ़ता गया और प्रभु और मनुष्य दोनों उससे प्रसन्न रहते थे (**2:26**)। शमूएल एक महान न्यायाधिश, नबी और याजक बना।

उपयोग:

1. जिन क्षेत्रों में विश्वास खोकर आपने प्रार्थना करना बन्द कर दिया है उन क्षेत्रों में फिर से विश्वास पाओ।

2. परमेश्वर के वचनों में बढ़िया समय बिताकर परमेश्वर को गहराई से जानो।

06-01-2016

दिन 6 - ऊरियाह बतशेबा का पती

2शमूएल 11

सारे इतिहास के दौरान अक्षमता, व्यभिचार और यहाँ तक कि अपराधों को ढांपने के कई प्रयास किये गए। पवित्र शास्त्र में छुपानेवाली बातें शुरूआत में ही लिखे गए हैं। आदम और हव्वा अपनी नग्नता को छिपाने और परमेश्वर से छिपने की कोशिश कर रहे थे, इस बात से अंजान कि उनका यह प्रयास उनके पाप और अपराध को धोखा दे रहा था। 2शमूएल 11 छुपाने के सबसे महान प्रयासों में से एक है, और दूसरे कई प्रयासों की तरह यह भी बुरी तरह से विफल होता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि दाऊद, ऊरियाह और बतशेबा एक दूसरे से शायद ही अजनबी हैं, लेकिन वो एक दूसरे को कम से कम कुछ हद्द तक जानते हैं। बतशेबा एलीआम की बेटी (**2शमू.23:34**) और अहीतोपेल की पोती थी, एलीआम दाऊद के शूरवीर लोगों में से एक था।

ऊरियाह का नाम दाऊद के पराक्रमी योध्दाओं की सूचि में लिखा है (**2शमू.23:39**; **1इति.11:41**)। जब दाऊद अदुल्लाम की गुफा में था तब कुछ "पराक्रमी योध्दा" उसके पास आए (**1शमू. 22:1-2**) और हमें यह संदेह है कि उनमें योआब, अबीशै और असाहेल यह तीनों पराक्रमी योध्दा भाई भी शामिल थे (**2शमू.23:18,24**; **1इति.11:26**)। दूसरे दाऊद के साथ सिकलग में आ मिले(**1इति.12:1**) और दूसरे महान योध्दा हेब्रोन में दाऊद के साथ शामिल हो गए (**1इति.12:36-40**)। हमें यह नहीं पता कि ऊरियाह दाऊद के साथ कब शामिल हुआ, हालांकि ऐसा प्रतित होता है कि यह दोनों एक दूसरे को जानते थे, साथ युध्द करते और शायद शाऊल से भागते समय भी दोनों साथ में थे।

दाऊद को पता था कि जो उसने किया वह गलत था, फिर भी उसने किया। कई बार हम भी शैतान का सुनते हैं जो हमें इस संदेह और विश्वास में डालता है कि मेरे पाप से किसी पर कोई असर नहीं पड़ेगा, परन्तु निश्चय ही असर पड़ता है। दाऊद यदि इन सब बातों के बारे में सोचता, तो उसे पता चलता कि इसकी कीमत जो वह उस समय सोच रहा था उसकी तुलना में कई गुना अधिक था। दाऊद को केवल इतना भी अंदाजा होता कि इस आनन्द पाने के इस अवैध चाह का प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष परिणाम होगा:

- **एक अनचाहा गर्भ**
- **एक भरोसेमन्द दोस्त की हत्या**
- **एक मरा हुआ बच्चा**

- **उसकी बेटी का उसके बेटे द्वारा बलात्कार**
- **एक बेटे के द्वारा दूसरे बेटे की हत्या**
- **अपने बेटों में से एक के नेतृत्व में गृहयुध्द**
- **एक बेटा जो दाऊद के आत्म-नियंत्रण की कमी को अपनाता और खुद को और इस्त्राएल के अधिकतर लोगों को परमेश्वर से दूर ले जाता**

प्रश्न: क्या हम इस बात को स्पष्ट रूप से समझते हैं कि चाहे किसी भी प्रकार का समझौता हम करें या किसी भी प्रकार के पाप में हम गिरें, उसके घातक परिणाम बाद में हमें सहने होंगे?

जब दाऊद ने बतशेबा की गर्भावस्था की विनाशकारी खबर सुनी, तब उस बात को उसे पश्चाताप के संकेत के रूप में लेना चाहिये था। इसके बजाए उसने वही किया जो अनेक अपश्चातापी पापी करते हैं: उसने अपने पाप को छुपाने की कोशिश की।

उसने ऊरियाह को घर वापस बुलाया कि वह बतशेबा के साथ शरीर सम्बन्ध करे ताकि उसकी गर्भावस्था के लिये एक कारण मिल जाए; और जब यह चाल काम न आई तो उसने कुछ इस तरह की योजना बनाई कि ऊरियाह युध्द के मैदान में अपने ही हाथों में अपनी मौत का परवाना लेकर लौटा।

अपने पापों को छुपाने की संकल्पना/विचार पूरी रीती से धोकादायक है। हमारे पाप कभी भी परमेश्वर से छिपे हुए नहीं हैं, और बड़ी मुश्किल से हमारे विवेक से छिपे हैं। हमारे छिपे हुए पाप परमेश्वर और दूसरों के साथ हमारी संगती में एक रूकावट पैदा करता है और हमारे धार्मिक जीवन और शक्ति में एक बाधा है। हम अक्सर भूल जाते हैं (**1यूहन्ना 1 और 2**) और इस बात में आत्मविश्वास बनाए रखें कि जब हम हमारे अपराधों को हम कबूल करते हैं तो हमारा परमेश्वर हमारे अपराधों को क्षमा करने और हमारी मदद करने में विश्वासी और अनुग्रहकारी है।

हम सभी के लिये असली सवाल यह है कि, "क्या हम पाप का सामना करने के लिये तैयार हैं? दूसरों के पाप की चर्चा नहीं परन्तु हमारे अपने पापों का सामना।"

स्परजीन का यह उल्लेख मुझे बहुत पसन्द है, "जैसे ही हम पाप के प्रति जागरूक होते हैं, सही काम यह नहीं कि पाप का कारण ढूंढें या फिर जब तक हम इस पाप के प्रति अपने आप को हृदय की एक सही स्थिती में न ले आएं तब तक इंतजार करें, लेकिन उसी समय तुरन्त जाकर प्रभु के सामने अपने अपराधों की कबूली करें।"

उपयोग:

अपने प्रलोभन/समझौतों के बारे में सोचो और उनके परिणाम की एक सूचि बनाओ।
प्रार्थना करो कि आज आपने पापों को कबूल करने और उन्हें न छिपाने का साहस आप कर पाओ।

दिन 7 - मपीबोशेत - परमेश्वर कैसे हम तक पहुँचते हैं 07-01-2016

2शमूएल 4:4, 2शमूएल 9:18, इफि. 2:1-6

मपीबोशेत का जीवन महान रूप से हमें इस बात की याद दिलाता है कि कैसे परमेश्वर हम तक पहुँचे और हमें बचाया। यह हमें उस बात की याद दिलाता है कि पापों में गिरने और हमपर उन पापों के प्रभाव के कारण हम कितने लाचार थे। उसकी कहानी हम तक पहुँचने के परमेश्वर के अविश्वसनीय प्रेम और उदारता की याद दिलाता है, जबकि हम उनके दुश्मन और उनके क्रोध के योग्य थे। परमेश्वर के प्रेम और अच्छाई को भूल जाना कितना आसान है, विशेष कर उस समय जब हम कठिन समय से गुजरते हैं और परमेश्वर के साथ समय बिताने की उपेक्षा करते हैं। यह कहानी एक बार फिर हमें इस बात को याद दिलाने का काम करता है कि परमेश्वर ने हमारे लिये क्या किया।

प्र. **2शमू. 4:4** के अनुसार मपीबोशेत कौन है?

प्र. मपीबोशत के पिता योनातन और शाऊल के मारे जाने के बाद जब मपीबोशेत की धाई उसे उठाकर भाग रही थी तब उसके साथ क्या हुआ?

प्र. जब यह घटना घटी तब मपीबोशेत की उम्र क्या थी?

प्र. जब परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार दाऊद को इस्राएल का राजा बनाया, तो दाऊद के मन में सबसे पहली बात क्या थी? (**2शमू. 9:1-5**)

प्र. मपीबोशेत राजा शाऊल का पोता होने के नाते उसके सिंहासन के लिये एक खतरा हो सकता था। इसके बावजूद दाऊद ने मपीबोशेत के लिये क्या करने का फैसला किया? (**2शमू. 9:6-11**)

प्र. **2शमू. 9:8** के अनुसार मपीबोशेत अपने बारे में कैसा महसूस कर रहा था? आपको क्या लगता है वो ऐसा क्यों महसूस कर रहा था?

प्र. **2शमू. 9:11** के अनुसार दाऊद मपीबोशेत के बारे में कैसा महसूस कर रहा था या किस नजर से उसे देख रहा था?

इफिसियों 2:1-6 पढ़ो और विचार करो कि हमारी कहानी इस कहानी से कितनी मिलती जुलती है और जब हम पापी ही और असहाय थे तब कैसे परमेश्वर हम तक पहुँचे।

प्र. **वचन 1-3** के अनुसार हमारी हालत कैसी थी? क्या इस तरह से आप अपने आप को देखते हो? यह महत्वपूर्ण क्यों है?

प्र. **वचन 4** परमेश्वर का विवरण कैसे करता है?

प्र. **वचन 6** के अनुसार परमेश्वर ने हमारे लिये क्या किया? हम कितनी बार इस बात के बारे में सोचकर परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं?

यह आसान है कि क्षणिक संघर्ष और परिक्षाएं हमें परमेश्वर कौन हैं और उन्होंने हमारे लिये क्या किया है यह भुला दें। मपीबोशेत की कहानी हमें यह याद दिलाती है कि हमारी कमज़ोरी और पाप में कैसे परमेश्वर हम तक पहुँचे और कैसे अपने बेटे-बेटियों में से हमें एक बना दिया। यह हमें कृतज्ञता सिखाना चाहिये जो आराधना की चाबी और परमेश्वर की सेवा का जीवन है।

दिन 8 - याजक यहोयादा

08-01-2016

2इतिहास 22:10-12, 23:1-21

दृष्य: यहोयादा का विवाह पूर्व राजा अहज्याह की बहन से हुआ है।(**22:11**) अर्थात् वह पूर्व राजा का जीजा है और अहज्याह से पहले राजा यहोरोम का दामाद था। यहोयादा खुद को एक कठीन चुनाव की समस्या में पाता है। वह जानता था कि योआश को पनाह देना देशद्रोह से कम नहीं है। बहरहाल परमेश्वर का याजक होने के नाते वह दिव्य कानून और इच्छा के अधिन हो जाता है। यहोयादा दूसरों की नजरों से योआश को बचाकर मन्दिर में उसे बढ़ा करने का रास्ता खोज लेता है। यहोयादा की उम्र में एक बच्चे को संभालना, यहाँ पर यही बात महत्वपूर्ण नहीं है पर उसमें जाखिम भी है। पूरा राज्य अतल्याह के नियंत्रण में है। यदि उसे इस बात का पता चल जाता तो न केवल योआश मारा जाता उसके साथ यहोयादा भी मारा जाता।

1. जोखिम उठाओ (2इतिहास 22:10-12)

-यहोयादा ने अपने जीवन की परवाह किये बिना जो सही है वह करने का निर्णय लिया।
-जब हम देखते हैं कि हमें व्यक्तिगत लाभ है तब ही हम जोखिम उठाते हैं।
-क्या हम कभी जो सही है वह करने के लिये जोखिम उठाते हैं?
-पिछली बार कब मैंने परमेश्वर के वचनों का पालन करने के लिये जोखिम उठाया?
-पिछली बार कब आपने अपने रिश्ते को खतरे में डालकर किसी के पाप को उसके सामने लाया?
-जब हमें पता होता है कि इसकी कीमत हमें अपने काम, रिश्तों, भविष्य की असुरक्षितताओं, या फिर हमारे बच्चों के भविष्य को दांव पर लगाकर चुकाना होगा, तो तब क्या हम परमेश्वर के स्तरों से समझौता कर लेते हैं?
-जब हमने यीशु के शिष्य बनने का निर्णय लिया तब हमने एक जाखिम उठाया। कौनसी बात अब हमें रोक रही है?
-हम अब जोखिम नहीं उठाते क्योंकि हमें असफल होने का डर है।
-भारतीय सेना के गोरखा राईफल्स के एक सैनिक के यह शब्द मुझे बहुत प्रीय हैं, **"कुछ लक्ष्य इतने महान हैं कि उनके लिये असफल होना भी गौरवपूर्ण है"**।

चुनौती: एक जाखिम उठाओ। कुछ ऐसा करो जो आपके लिये चुनौतीपूर्ण हो। एक पवित्र शास्त्र चर्चा की अगुवाई करो, नई जगह पर एक पारिवारिक गुट की शुरूआत करो, जिनस आपको डर लगता उन लोगों को आमंत्रण दो, एक मिशन टीम में जाओ, एक साल परमेश्वर की सेवा करने की चुनौती लो। जोखिम लो। बातों के घटने का इंतजार करते सिर्फ बैठे मत रहो।

2. एक गुट(टीम) बनाओ (2इतिहास 22:10-12)

-अपनी योजना को सफल बनाने, योआश को राजा बनाने के लिये यहोयादा को एक टीम की ज़रूरत थी।

-छ: वर्षों तक यहोयादा छिपा रहा।

-छ: वर्षों तक बच्चा भी मन्दिर में छिपा रहा, जिसका पता सिर्फ कुछ चुने हुए लोगों को था।

-कई वर्षों तक वह पर्दे के पिछे उन रिश्तों को मजबूत बनाने का काम करता रहा जिसके द्वारा दुष्ट रानी को गद्दी से हटाया जा सके।

-यहोयादा की गुप्त टोली का प्रारंभिक कार्य यह था कि निर्धारित समय पर याजकों और नेताओं को यरूशलेम में इकट्ठा करें।

-यह उल्लेखनीय है कि यहोयादा अपनी सूचि की शुरूआत उन लोगों से करता है जिन्हें वह बेहतर रूप से जानता था-याने लेवियों को। (व.2)

-जब वे यरूशलेम में पहुँचे तब यहोयादा ने अपने भव्य योजना का खुलासा किया।

-उसने लोगों के सामने पहले योआश को प्रस्तुत कर फिर मतदान करने को नहीं कहा।

-वो पहले उनसे एक वाचा बान्धता है और फिर उन सभी की समान समस्या का उत्तर प्रस्तुत करता है। वह उत्तर है एक सात वर्ष का बालक योआश।

-एक टीम की तरह मिलकर काम किये बिना परमेश्वर के राज्य का विकास नहीं हो सकता।

-हमें उस टीम के खिलाड़ी के रूप में बुलाया गया है।(**1कुरू.12**)

-क्या मैं एक टीम का खिलाड़ी हूँ?

-या फिर मैं सिर्फ एक बाहर खड़ा दर्शक हूँ?

-मदद करने के लिये क्या मैं अपने हाथ गन्दे करने के लिये तैयार हूँ, या मैं आलोचक और नकातरत्मक हूँ?

3. परमेश्वर को फिर से पुकारना (**2इति.23: 16-21**)

-यहोयादा ने एक वाचा बांधी कि, वह, सारी प्रजा और राजा सभी प्रभु की प्रजा होंगे।

-यहोयादा की तरह हमें पहले खुद को परमेश्वर के पास लाना है, हमारे परिवार को परमेश्वर की प्रजा होने के लिये बुलाना है, और संसार को परमेश्वर की प्रजा होने के लिये बुलाना है।

-जब हमने बप्तीसमा लिया तब हमने परमेश्वर के साथ एक वाचा बांधी कि, यीशु हमारा प्रभु होगा। क्या अब भी वह तुम्हारे जीवन, तुम्हारे समय, तुम्हारे प्रतिभा, तुम्हारे पैसों का प्रभु है?

-क्या वह आज भी वैसा ही प्रभु है जिसे दूसरों के साथ बांटने के लिये आप उत्साहित हो?

-मैंने पिछली बार कब किसी को मसीह यीशु का शिष्य बनने में मदद की?

चुनौती: हर दिन किसी के साथ मसही को बांटने का निर्णय बनाओ।

09-01-2016

दिन 9 - सारपत नगर की विधवा

नबी एलिय्याह को एक अलोकप्रिय समाचार के साथ शत्रुतापूर्ण लोगों के पास भेजा गया-राजा अहाब और ईजेबेल। उनके पहले मुठभेड़ में ही वो उसे मार डालना चाहते थे। परमेश्वर द्वारा दिये गए अधिकार को प्रस्थापित करने के लिये एलिय्याह ने बताया कि अगले कुछ वर्षों तक वहाँ न वर्षा होगी और न ओस पड़ेगी जब तक कि एलिय्याह न चाहे।

1राजा 17:7-24 पढ़ो

विधवा होना ही अपने आप में एक बड़ी चुनौती रही होगी। फिर, पानी की कमी, सूखा अकाल, और सूखी भूमि का सामना करना विशेष कर एक बेटे की देखभाल की जिम्मेदारी में यह सब निराशाजनक स्थिती की तरह लगा होगा।

1राजा 17:7-9

-हमारी ज़रूरतों को पूरा करने का परमेश्वर का एक रहस्यमय फिर भी एक विनोदी तरीका है।

-वह एलिय्याह को बताता है कि उसकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये उन्होंने एक विधवा का चुनाव किया है।

-अपने काम को पूरा करने के लिये परमेश्वर किसी को भी चुनते हैं।

-क्या आप यह विश्वास करते हैं कि अपनी इच्छा पूरी करने के लिये परमेश्वर ने आपको चुना है?

-क्या आप यह विश्वास करते हो कि अपके ज़रूरत के समय परमेश्वर किसी तुच्छ, साधारण और जो कुछ भी नहीं है ऐसे व्यक्ति का चुनाव करेंगे जो आपके लिये महान मददगार साबित होगा?

1राजा 17:10-14

-विधवा को कोई आशा नहीं थी।

-उसकी योजना आखिरी भोजन पकाने और फिर मौत का प्रतीक्षा करना था।

-उसकी ज़रूरत को पूरा करने के लिये परमेश्वर ने एलिय्याह को भेजा था।

-एक व्यक्ति जिसने उसका आखिरी भोजन भी अपने साथ बांटने को कहा वह उसका और उसके बेटे का बचानेवाला बना।

-जो व्यक्ति उसके लिये बोझ था वह उसका बोझ दूर करने वाला बन गया।

-वह और उसका बेटे जीवित रह पाए क्योंकि उसने आज्ञा पालन करने का निर्णय किया।

-जब आज्ञा पालन करना कठीन था तब उसने आज्ञा पालन की इसलिये उसे आशीष मिला।

-जब मुश्किल हो तब भी क्या हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं?

-हमारे पास जो थोड़ा है क्या हम उदारता के साथ वह देने के लिये तैयार हैं ताकि परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को पूरा करता रहे?

1राजा 17:15-16

-जब विधवा ने जो कुछ भी उसके पास था उसमें परमेश्वर पर भरोसा रखने और नबी की आज्ञा मानने का निर्णय बनाया, तो परमेश्वर ने उसे और उसके परीवार को उनके दैनिक ज़रूरतों को पूरा करके आशिषित किया।

-परमेश्वर हमारा दाता है। वह हमारी ज़रूरतों को पूरा करता है। कभी-कभी वह असामान्य परिस्थितियों में रहस्यमय लोगों के माध्यम से, रहस्यमय तरीके से हमारी ज़रूरतों को पूरा करता है।

1राजा 17:17-24

-हम सभी अपने बच्चों से प्रेम करते हैं। हम नहीं चाहते कि हमारे बच्चों के साथ कुछ बुरा हो।

-अपने बच्चों को बेहतर देने के लिये हम सबकुछ करते हैं। जैसे अच्छी शिक्षा, अच्छे कपड़े आदि।

-विधवा का बेटा अकाल से बच गया लेकिन बाद में बिमारी के कारण रहस्यमय रीति से मर गया।

-क्या त्रासदी! क्या असहाय दुःख!

-जब त्रासदी हम पर हमला करती है, हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है?

-क्या हम परमेश्वर पर दोष लगाते हैं? क्या हम हमारे आसपास के लोगों पर दोष लगाते हैं? या फिर इस विधवा स्त्री की तरह प्रतिक्रिया करते हैं?

-इस स्त्री ने अपने जीवन, अपने पाप और अपनी क्रिया की ओर देखा।

-परमेश्वर ने उसे उसका बेटा लौटाया और हमें यह याद दिलाया कि जो कुछ भी हमारे पास है वो सबकुछ परमेश्वर का है और उसे वापस लेने का उसे पूरा अधिकार है, जो भी वो चाहे और जब भी चाहे।

-हम सिर्फ काम की प्रतिक्रिया दिखा सकते हैं।

-हम सिर्फ अय्यूब की तरह प्रतिक्रिया कर सकते हैं, "प्रभु ने दिया और प्रभु ही ने लिया; प्रभु का नाम धन्य है"। (**अय्यूब 1:21**)

चुनौती: कौनसी आज्ञा पालन करना अभी आपको मुश्किल लग रहा है उसे लिखो और प्रार्थना करो कि चाहे कितना भी मुश्किल हो परमेश्वर उसे मानने के लिये आपको शक्ति दे।

10-01-2016

दिन 10 - ओबाद्याह

1राजा 18:1-16

ओबाद्याह एक साधारण व्यक्ति जिसने असाधारण साहस दिखाया

सामरी राज्य भीषण अकाल से गुजर रहा था। साढ़े तीन साल तक निरंतर सूखा पड़ा था। अन्ततः परमेश्वर को उन पर दया आई और उन्होंने वर्षा बरसाई।

अहाब सामरिया का एक दुष्ट राजा था, फिर भी ऐसा प्रतीत होता है कि वह महल का प्रशासक और परमेश्वर का भय माननेवाले व्यक्ति ओबाद्याह पर भरोसा करता था, जिसके नाम का अर्थ था, "परमेश्वर का सेवक"। व. 3-4 में दिये गए उसके परिचय से हमें लगता है कि वह परमेश्वर का सेवक था। उसने परमेश्वर का भय मानने वाले व्यक्ति के समान साहस दिखाया।

महल में सेवारत होते हुए रानी की इच्छा के विरूध काम करना आसान बात नहीं थी। इस प्रकार का काम मुसिबत खड़ी कर सकता था यहाँ तक कि मौत भी। फिर भी ओबाद्याह ने असाधारण साहस दिखाते हुए एक दुष्ट रानी ईजेबेल के सताव से 100 नबियों को बचाया। उसने उन्हें सिर्फ छिपाया ही नही परन्तु उन्हें रोटी और पानी भी दिया। यह एक कृपापूर्ण कार्य था।

जब आप परमेश्वर का भय मानते हैं तो लोग और परमेश्वर आप पर भरोसा करते हैं।

वचन 5-6: अहाब ने तीव्र सूखे के बीच अपने जानवरों के लिये घास लाने के लिये उसे भेजा, क्योंकि उसे उस पर विश्वास था कि वह काम को पूरा ज़रूर करेगा।

वचन 8-11: यहाँ तक कि एलिय्याह ने भी उसके और राजा अहाब के मध्यस्थ के रूप में ओवाद्याह का इस्तेमाल किया क्योंकि वह उस पर भरोसा करता था।

नबी को बचाकर ओबाद्याह ने स्पष्ट रूप से जोखिम लिया था। क्या स्वाभाविक रूप से वह एक साहसी व्यक्ति था? (**1राजा 18:9**) में एलिय्याह के साथ उसकी बातचीत को देखकर आपको ऐसा नहीं लगेगा। सच्चाई यह है कि लोगों के बजाए परमेश्वर का भय वो अधिक मानता था और इसी बात ने उसे इतना बड़ा जोखिम उठाने में सक्षम बनाया।

क्या आप लोगों की तुलना में परमेश्वर का ज्यादा भय मानते हो? क्या आपके जीवन में ऐसी कोई परिस्थिति थी कि जब आप परमेश्वर का भय मानने के कारण सच्चाई पर डंटे रहे?

क्या आप एक ऐसे व्यक्ति हो जिसे अगुवे के द्वारा एक विशेष स्थान दिया जाए तभी आप सही काम करते हो? जब आपने कुछ महान काम किया और उस बात को ज्यादा मान्यता नहीं दी जाती तो आपको कैसा महसूस होता है?

क्या आप यह विश्वास करते हो कि ओबाद्याह परमेश्वर का भय मानता था इस कारण से उसे स्वर्ग में एक महान स्थान मिलेगा?

पवित्र शास्त्र में सभी महान लोगों के बारे में एक बात आम है। वह है, "परमेश्वर का भय"। यह परमेश्वर का भय ही है जिसने साधारण लोगों के जीवन में एक बड़ा अन्तर लाया है।

उपयोग: आज आप कुछ अलग करने का निर्णय कर सकते हैं क्योंकि आप परमेश्वर का भय मानते हैं।

अपने काम की जगह पर आप यदि किसी से डरते हैं या उसके साथ सही रिश्ता नहीं है, उसके साथ अपना विश्वास बांटो।

'परमेश्वर के भय' पर या 'परमेश्वर का भय मानने वाले लोगों' पर अध्ययन करो।

चुनाव: दानिय्येल (**दानिय्येल 6**), दाऊद, शिप्रा और पूआ (**निर्गमन 1:15-17**) के साथ ओबाद्याह की तुलना करो।

11-01-2016

दिन11 - मीकायाह

1राजा 22:1-28

इस्राएल का राजा- अहाब और यहूदा का राजा- यहोशापात राजनीतिक कारणों से एक दूसरे से मिले। वे अराम के राजा पर चढ़ाई करके रामोत गिलाद को प्राप्त करना चाहते थे।
अहाब ने राजा यहोशापात से मदद माँगी; लेकिन इससे पहले वह परमेश्वर की सम्मती पाना चाहता था। यहीं पर अहाब के ४०० नबी और परमेश्वर का एकमात्र नबी मीकायाह दृष्य में आते हैं। अहाब मीकायाह के बारे में यह कहता है:
(**1राजा 22:8**)- इस्राएल के राजा ने यहोशापात से कहा, "हां, यिम्ला का पुत्र मीकायाह एक पुरूष और है जिसके द्वारा हम प्रभु से पूछ सकते हैं? परन्तु मैं उससे घृणा रखता हूँ, क्योंकि वह मेरे विषय कल्याण की नहीं वरन् हानि ही की भविष्यवाणी करता है"।

यहाँ इस अनुछेद में हम देखते हैं परमेश्वर के नबी मीकायाह को और ४०० झूठ बोलने वाले नबी। इस्राएल और यहूदा के राजा यह जानना चाहते थे कि, अराम के राजा के साथ का युध्द वो जीतेंगे या नहीं। अहाब के ४०० नबियों ने वही कहा जो राजा सुनना चाहते थे, लेकिन मीकायाह ने वो कहा जो प्रभु चाहते थे। हालांकि दूसरों ने उसे मजबूर किया के वो राजा के हित की बात कहे, परन्तु उसने समझौता नहीं किया। एक छोटा सा झूठ बोलकर वह जोखिम लेने से बच सकता था, परन्तु वह सच्चाई पर अड़ा रहा।

सच बोलने के कारण सिदकिय्याह ने मीकायाह को थप्पड़ मारा। उसे जेल में डाला गया फिर भी वह परमेश्वर के जन की तरह खड़ा रहा। उसने खुद को या दूसरों को प्रसन्न नहीं किया पर सिर्फ परमेश्वर को।

क्या आप घर में,काम पर और समाज में परमेश्वर का जन हो? जो परमेश्वर चाहता है क्या आप वही बोलते हो? अहाब को मीकायाह पसन्द नहीं आया क्योंकि उसने वो नहीं कहा जो राजा सुनना चाहता था। क्या आप सच बोलने के कारण दूसरों के घृणा का पात्र बनना पसन्द करोगे?

आपको किस तरह के लोग पसन्द हैं? वह जो आपको सच बोलते हैं या वो जो वही बोलते हैं जिससे आपको आनन्द मिलता है? वो कौनसी बातें हैं जहाँ खुद को मीकायाह नबी के साथ जोड़ सकते हैं।
सच बोलने की क्या कीमत आपने चुकाई है? क्या वह कीमत उस बात के लिये उपयुक्त था?

आप परस्पर विरोधी विचारों के बीच चुनाव कैसे करते हैं? क्या आप अपनी सुरक्षा की बात सोचते हैं या फिर जोखिम उठाने के लिये तैयार रहते हैं? यदि आप अकेले ही हो तो भी क्या आप सच के लिये डंटे रहोगे?

उपयोग: उन परिस्थितियों की सूचि बनाओ जहाँ पर आप सच नहीं बोल पाए; मीकायाह की तरह खड़े रहने के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करो और आत्मविश्वास पाओ।

जो लोग आपको सच बताते हैं उनसे मिलने की पहल करो और उनकी सलाह लो।

12-01-2016

दिन 12 - नामान के पत्नी की सेविका

2राजा 5:1-15

समाधान का स्त्रोत

हम नामान को बड़ी अच्छी तरीके से जानते हैं। वह राजा अराम की सेना का सेनापति था। उसके मालिक के नजरों में वह महान और प्रतिष्ठित व्यक्ति था। उसके द्वारा परमेश्वर ने अराम को विजयी किया था। वह एक बहादुर सैनिक था। लेकिन एक समस्या थी नामान कोढ़ी था।

इस्त्राएल से एक युवा महिला को बन्दी बनाया गया और वह नामान की पत्नी की सेवा करती थी। उसके बारे में कुछ असाधारण था। बहूत दर्द और शर्मिन्दगी से गुजरने के बावजूद भी वह जगत के परमेश्वर के प्रति विश्वासी बनी रही। जबकि कुछ लोगों को जब दर्द का सामना करना पड़ता है तब वे परमेश्वर पर भरोसा करना छोड़ देते हैं, वह एक बड़ी समस्या के लिये समाधान का स्त्रोत बनी।

हम सभी को हर समय समस्याओं का सामना करना पड़ता है, हम खुद अकेले ही उन समस्याओं का कारण हैं। आज हम इस छोटी सी लड़की से, इस गुलाम लड़की से सीखने जा रहे हैं कि जिन समस्याओं का हम सामना करते हैं उनका समाधान हम कैसे बनें।

उस छोटी लड़की ने अपनी स्वामिन से कहा, "यदि केवल..." (**1राजा 5:3**)। वह सिर्फ आदर के साथ ही नहीं परन्तु पूरे विश्वास के साथ बात करती है। यह तभी हो सकता है जब वह इस्त्राएल के सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर पूरा विश्वास रखती हो।

अब हम यह जानते हैं कि नामान इस्त्राएल के परमेश्वर पर विश्वास करता था। वास्तव में **1राजा 5:1** कहता है कि, प्रभु यहोवा ने राजा अराम को जो एक सिरियाई था नामान के द्वारा विजयी किया। यहाँ एक संभावना यह भी है कि शायद यह छोटी लड़की "यहोवा" के बारे में लगातार नामान और उसकी पत्नी से बात कर रही होगी। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि यह छोटी लड़की पहली बार सामरिया में इस नबी के बारे में बात कर रही हो। हालांकि बहूत बार मनाने के बाद उसके मालिक ने उसकी बात सुनी।

ध्यान दो कि वह छोटी लड़की कैसे 'मेरा स्वामि' कहती है, यह दिखाता है कि नामान का वह बहुत प्यार के साथ नामान का देखभाल किया करती थी।

इतिहास बताता है कि इस्राएल के राजा अहाब को युध्द में जिसने अपने तीर से मारा वह नामान है (**1राजा 22:31-35**)। इस्राएल एक दुश्मन राष्ट्र होने के कारण नामान का साहसी होना आवश्वक था। पहले उसे सीरिया के राजा से अनुमति लेनी पड़ी और फिर जाकर उसने दुश्मन राजा यहोराम का सामना किया। और उसने वह किया! क्यों? यह हमारे परमेश्वर का सामर्थ है जो उस गुमनाम नायिका, छोटी लड़की के द्वारा प्रकट हुआ।

हमारा परमेश्वर हमारी सभी समस्याओं का समाधान करने वाला स्त्रोत है, इस बात से कोइॅ फर्क नहीं पड़ता कि समस्या कितनी बड़ी या कितनी छोटी है। क्या हम इसमें विश्वास करते हैं?

छोटी लड़की ने असाधारण में विश्वास किया। एक गुलाम होने के बावजूद उसने अपने स्वामि को वो बात करने के लिये मनाया जिसको करने की वो कभी कल्पना भी नहीं करता-एक प्रतिद्वंदी राजा से मदद मांगना।

हम ऐसे लोगों से घिरे हैं जो यीशु मसीह पर या उनके सामर्थ पर विश्वास नहीं करते। हम देखते हैं कि अपने जीवन में वो गहरे संकटों से गुज़रते हैं। क्या हम उन्हें अनदेखा करते या असहाय महसूस करते हैं? या फिर हम वो कर सकते हैं जो इस छोटी लड़की ने किया-उनको मनाओ कि वे "यीशु को परखें"।

हम जानते हैं कि, नामान ने प्रतिद्वंदी राजा के दुरूपयोग का सामना किया, फिर एलीय्याह के चंगाई के तरीके से वो निराश हुआ। फिर भी जब उसने अपने सैनिकों की बात सुनी वह चंगा हो गया।

नामान ने इस्राएल के परमेश्वर को परखा और विजयी हुआ।

यह विजय तब तक पूरी नही होगी जब तक हम उस छोटी लड़की के बारे में बात न करें जिसने पर्दे के पीछे रहकर नामान की जिन्दगी में काम किया।

उपयोग: सबसे पहले हम यह विश्वास करें कि हम एक ऐसे परमेश्वर की आराधना करते हैं जिनसे यदि हम मांगें तो वो हमारे हरएक समस्या का समाधान करते हैं।

आओ हम हमारे गैर विश्वासी सहयोगियों को 'यीशु को परखने' के लिये मनाएं। हो सकता है कि उनके जीवन के हम एक गुमनाम नायक बनें।

दिन 13 - रेकाबी

13-01-2016

यिर्मयाह 35

परमेश्वर इस्राएलियों को सबक सिखाने के लिये रेकाबियों का उपयोग करते हैं। **व.1** में वो यिर्मयाह से कहते हैं कि उनके पास जाकर उन्हें दाखमधु दे। उनका उत्तर **व. 6-7** में है जहाँ पर वो कहते हैं, हम दाखमधु नहीं पीते, कभी घर बान्धने का काम नहीं करते और न ही दाख की बारियां लगाते हैं, क्योंकि हमारे पुरखा योनादाब ने **200** वर्ष पहले हमसे यह सब न करने की आज्ञा दी थी। **व. 12-17** में परमेश्वर इसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया देते हुए इस्राएलियों की प्रतिक्रिया से रेकाबियों की प्रतिक्रिया की तुलना करते हैं।

आओ हम इसकी विपरीतता देखें:

1. रेकाबियों ने गलती करनेवाले एक मानवी अगुवे से किये वादे को निभाया लेकिन इस्राएलियों ने अपने दिव्य अचूक अगुवे की वाचा को तोड़ डाला।

2. योनादाब ने सिर्फ एक बार उनसे शराब न पीने को कहा और उन्होंने आज्ञापालन किया लेकिन परमेश्वर ने अपने लोगों को कई बार पाप से दूर रहने को कहा, फिर भी उन्होंने इंकार किया।

3. रेकाबियों ने अस्थायी मुद्दों से निपटने वाले कानून की बात को माना लेकिन इस्राएलियों ने अनन्त मुद्दों के साथ निपटने वाले परमेश्वर की बातों का इंकार किया।

4. रेकाबी सैंकड़ों वर्षों तक आज्ञा पालन करते रहे लेकिन इस्राएली सैंकड़ों वर्षों तक आज्ञापालन नहीं किया।

5. रेकाबियों को प्रतिफल मिलेगा लेकिन इस्राएलियों को दंडित किया जाएगा।

योनादाब ने अपने बेटे बेटियों को आज्ञा दिया कि वे, दाखमधु न पीएं, घर न बनाएं, बीज न बोएं, दाख की बारी न लगाएं, लेकिन तम्बुओं में रहें। उनके निर्देश गंभीर लग रहे थे, और हम शायद इस बात पर बहस भी कर सकते हैं कि वह उन्हें पूरी तरह से वैध चीजों से वंचित रख रहा था। हालांकि यह बात स्पष्ट थी कि वह एक ऐसा व्यक्ति था जो गहराई से परमेश्वर का भय मानता था। अपने चारों ओर भयंकर दुष्टता देखते हुए इस प्रकार के पाप और अराजकता से अपना जीवन बचाना चाहता था, और इसीलिये उसने उन्हें पवित्र प्रतिज्ञा के तहत रखा।

यह उनके तीर्थ चरित्र को बनाए रखने और अपनी जड़ों को थामे रहने के लिये किया गया। इस्राएल देश के महान संस्थापक तम्बुओं में रहते थे, और योनादाब ने यह निर्णय किया कि उसके परिवार के लोगों को भी ऐसा ही करना चाहिये। उल्लेखनीय बात यह है कि 200 साल बाद भी उसके वंशज परिवार इस परम्परा के प्रति पूरी तरह वचनबद्ध थे, और यही विशेषता थी।

परम्परा एक ऐसी चीज है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी और आनेवाली सभी पीढ़ियों को पहुँचाई गई और वे इन परम्पराओं के अनुसार अपना जीवन बिताते रहे। उन्होंने इतनी मजबूती से अपने परिवार की परम्परा पालन किया कि जब यिर्मयाह ने उन्हें शराब पीने के लिये राजी करने की कोशिश की तो उन्होंने साफ इंकार कर दिया, और उनके पिता योनादाब की आज्ञा की कहानी सामने आई। (**यिर्मयाह 35:8-10**)

यिर्मयाह रेकाबियों को अपनी वचनबध्दता के प्रति बेवफाई करवाना नहीं चाहता था, वह परमेश्वर के लोगों-यहूदा के लिये एक सबक के रूप में उनकी भक्ति के उदाहरण का उपयोग करना चाहता था। रेकाबी अपने पूर्वजों की आज्ञाओं का पालन करने में पूरी रीति से खरे थे जबकि उनकी तुलना में यहूदा के लोग अपने प्रभु परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने में बहुत कमजोर थे। इस कहानी से यही विशेष मुद्दा बाहर आता है जो आज हमारे लिये एक सबक प्रदान करता है।

प्रश्न: अपने परिवार को हम कौनसी धार्मिक परम्पराएं दे रहे हैं? याद रहे कि जो हमारे पास नहीं है उसे हम नहीं दे सकते हैं।

दिन 14 - लेखक बारूक

14-01-2016

यिर्मयाह 36:1-32

बारूक यिर्मयाह का करीबी मित्र था और यहूदा में कई वर्षों तक परमेश्वर के वचन का प्रचार करने में उसका साथी था। उन दोनों ने ६०७ ई.पू. में कसदियों द्वारा यरूशलेम का भयानक विनाश देखा जिसके परिणामस्वरूप वे मिस्र में निर्वासित हुए। क्योंकि यिर्मयाह ने लोगों के दुष्ट व्यवहार के खिलाफ बात की थी इस कारण से इस समय उसपर प्रतिबंध लगाया गया था अर्थात् या तो वह जेल में था या मन्दिर में प्रवेश करने की मनाही थी, इसलिये उसने बारूक की मदद ली।

बारूक ने यिर्मयाह के सभी निर्देशों का पालन किया। जैसे यिर्मयाह ने कहा वैसे ही सब उसने चर्मपत्र पर लिखा।
बड़े उपद्रव के बीच यिर्मयाह का साथ देकर बारूक ने अपनी जान को जोखिम में डाला। यह शब्द परमेश्वर के आनेवाले न्याय के बारे में थे। राजा परमेश्वर के खिलाफ था, इसलिये बारूक के लिये खुले आम मन्दिर में जाकर सब लोगों के सामने इन चेतावनियों को पढ़कर सुनाना जोखिम भरा था।

पिछली बार जब आप परमेश्वर के राज्य के लिये कुछ करने के लिये उत्साहित थे उस बात के बारे में सोचो।
पिछली बार आपने कब परमेश्वर का वचन बांटने का जोखिम उठाया?
कितना खुलकर आप अपना विश्वास बांटते हो?
पिछली बार कब आपने किसी के साथ परमेश्वर के बारे में बात की?

व.२७ में हम देखते हैं कि राजा ने जला दिया और व.३२ में हम देखते हैं कि यिर्मयाह ने राजा के विरूध की गई भविष्यवाणी में और अधिक बातों को जोड़कर फिर से बारूक को लिखने के लिये कहा, जो बारूक ने किया। बारूक एक विश्वासी दोस्त और एक वफादार साथी का अच्छा उदाहरण है। बारूक ने सताव के डर से परमेश्वर की बातों को पूरे विश्वास और लगातार बोलते रहने से खुद को नही रोका।

क्या आपके जीवन में ऐसा कोई दोस्त है जिसके लिये आप वैसे ही दोस्त और सहारा हो जैसे बारूक यिर्मयाह के लिये था?

परमेश्वर के वचन बांटना आपके लिये कितना महत्वपूर्ण है?

जब प्रतिक्रिया सकारात्मक नहीं है क्या आप तब भी अपना विश्वास बांटने के इच्छुक हो?

चुनौती: इस सप्ताह किसी के साथ वचन बांटो। तैयारी करो। विशेष वचनों को लिखो और बांटो। प्रतिक्रिया की चिन्ता किये बिना दोबारा से जाओ और वचना बांटो।

मिनिस्ट्री में जो सक्रिय है उसके बारे में सोचो और प्रार्थना करो। उस शिष्य के पास जाओ और पूछो कि आप कैसे उसकी मदद कर सकते हैं?

दिन 15 - एबेदमेलेक

15-01-2016

परमेश्वर का छुटकारा

यिर्मयाह 38:1-13

यरूशलेम में यिर्मयाह एक अकेला भविष्यद्वक्ता था जो विनाश की भविष्यवाणी कर रहा था। उसका प्रचार झूठे नबियों के बिलकुल विपरीत था, जो शांति और सुरक्षा का प्रचार कर रहे थे। इस सन्देश को लोग सही रीति से नहीं ले पाए। इसीलिये दुर्बल राजा सिदकिय्याह (**38:5**)द्वारा यिर्मयाह को जेल में डाला गया और बाद में दलदल के गड्ढे (**38:6**) में डाला गया, मौत की वास्तविक संभावना के साथ (**38:4, 6,9**)। वह सिर्फ दया और मदद की गुहार लगा सकता था। जब तक परमेश्वर उसको न बचाता, उस गहरे दलदल में वह ज्यादा समय तक ज़िन्दा नहीं रह सकता था।(**भ.सं.102:19-20**)

अपने लोगों को बचाने के परमेश्वर अपने ही अजीब तरीके और संसाधन हैं। परमेश्वर की बोली और उनकी इच्छा पूरी करने के लिये हर कोने में परमेश्वर के चुने हुए लोग तैयार हैं।

एबेदमेलेक(अर्थात् "राजा का सेवक") एक कूशी, राजा के महल में के खोजों में से एक, ने जब यह सुना कि उन लोगों ने यिर्मयाह को गड्ढे में डाल दिया; वह राजा के घर गया, और यिर्मयाह के बचाव में बात किया। उसने राजा की सम्मति ली और फिर 30 दूसरे लोगों और फटे-पुराने कपड़े और चीथड़े की मदद से उसे उस गड्ढे से बचाया।

- एबेदमेलेक और यिर्मयाह जैसे साहसी लोगों को साहस के साथ बोलने की प्रेरणा किस बात से मिलती है?
- गड्ढे में यिर्मयाह की धार्मिक और शारीरिक स्थिति कैसी थी? क्या आप एक धार्मिक गड्ढे में होने की कल्पना कर सकते हैं? किस प्रकार की भावनाओं से आप गुजरते हो? (**भ.सं.37:7**)
- जब जाखिम हो तब भी क्यों आप सच के लिये डटे रहे?
- एबेदमेलेक अनेक बहाने दे सकता था पर उसने नहीं दिया। कयों?
- परमेश्वर और उसके लोगों की सेवा करने में हम कौनसे बहाने बनाते हैं?
- एबेदमेलेक को किस बात ने प्रेरित किया कि बिना किसी बात की चिन्ता किये उसने यिर्मयाह की मदद की? अपनी किताब सूची लिखो।
- क्या आपने हाल ही में किसी के लिये जितना हो सकता था उससे अधिक कुछ किया? किस कारण से आपने यह किया?
- हम यिर्मयाह को दु:ख उठाते देखते हैं, इस प्रकार के दु:ख उठाने का मकसद क्या है? क्या परमेश्वर किसी प्रकार के ऐच्छिक प्रभाव का इरादा रखते हैं? क्या आप हाल ही में किसी परीक्षा से गुजरे हो? कौनसे सबक सीखे?

एबेदमेलेक जैसे लोगों का इस्तेमाल करके परमेश्वर प्रसन्न होते हैं। उनकी समाज में कोई पहचान नहीं हैं; बाकी सारा संसार उन्हें सबके द्वारा ठुकराए गए नाकारे के रूप में देखता है। परन्तु परमेश्वर उन्हें अपने अप्रतीम खजाने के रूप में देखते हैं। परमेश्वर ने उसका उपयोग एक नबी को बचाने में किया, जिसने आगे चलकर परमेश्वर के वचनों का प्रचार किया और उन्हें पूरा होते हुए देखा।

- आज आप अपने बारे में कैसा महसूस करते हो? क्या आपको लगता है कि आपका कोई महत्व नहीं है, आप छोटे, कमजोर, अस्वीकृत और बेकार हो?(**1कुरू.1:27**)। क्या आप यह विश्वास करते हो कि वह आपका उपयोग शक्तिशाली रूप में कर सकता है?

- जब आपके आस पास के लोग परमेश्वर की सेवा करने को कतराते हैं तब क्या आप सेवा करने के प्रेरित होते हैं? यदि हाँ तो यह प्रेरणा कहाँ से आती है?

यिर्म.39:15-18 परमेश्वर ने एबेदमेलेक को इसका प्रतिफल दिया। परमेश्वर हमें कभी नहीं भूलता (**यशा .49:15**)

- एबेदमेलेक के विश्वास के कारण यिर्मयाह ने कौनसी पांच प्रतिज्ञाएं उसे दीं?

चुनौती: आज कई ऐसे लोग हैं जिनमें कुछ शिष्य भी हैं जो धार्मिक गड्ढे में गिरे हैं। वे निराश हैं, आशाहीन और अकेले महसूस कर रहे हैं, और तरस रहे हैं कि कोई उन्हें बचाए। प्रार्थना करो और परमेश्वर से मदद मांगो कि इस हफ्ते किसी ऐसे व्यक्ति तक पहुँच पाओ जो आध्यात्मिक गड्ढे में फंसा है।

16-01-2016

दिन 16 - हन्ना

लूका 2:36-38

1. हालांकि हन्ना ८४ वर्ष की थी फिर भी उसने मन्दिर कभी न छोड़ा। वह रात-दिन परमेश्वर की उपासना करती रही और उपवास और प्रार्थना में अपना समय बिताया।
इसका अर्थ है कि हन्ना हमेशा उपलब्ध थी और उसकी एक ही प्राथमिकता थी परमेश्वर और उसकी उपासना।
आपके बारे में क्या? आप परमेश्वर और उसकी कलीसिया को कितना समय देते हो?
क्या आप एक ऐसे मुकाम पर पहुँच गए हो जहाँ आपको लगता है कि बस आपने बहुत कर लिया?
क्या आपको ऐसा लगता है कि यह समय है कि आप पीछे हटकर आराम करें और दूसरी पीढ़ी परमेश्वर का काम करे?
2. जब व्यवस्था के शिक्षक अपने कामों में व्यस्त थे तब हन्ना ने मसीह को जाना और पहचाना। वे नियम और रीति रिवाज बनाने में व्यस्त थे।(**मत्ती .15:9**)

क्या आप इतने व्यस्त हो कि आप मसीह को और मसीह की पुकार सुनना चूक गए?

परमेश्वर जो आपसे बात करते हैं तो क्या आप सुनते हो?

3. हन्ना ने सभी से यीशु के बारे में बात किया।

यीशु के बारे में आप किससे बातें कर रहे हो?

उपयोग:

1. आज आप जिनसे भी मिलो उन सबसे यीशु के बारे में बात करो।
2. उपवास और प्रार्थना कर अपना सभी रोना-धोना प्रभु के हवाले करो, ताकि आप मसीह को खो न दो।

दिन 17 - एक स्त्री जिसने यीशु का अभिषेक किया

17-01-2016

लूका 7:36-50

यीशु ने हमेशा लोगों के घर को एक रूपांतरण की जगह की तरह देखा। घर के लोगों का रूपांतरण करने के लिये घर एक बेहतर जगह है। यीशु के समय अतिथी सत्कार जोरों से होता था और अधिकतर यह बराबर के लोगों के बीच होता था। लेकिन यीशु ने अमीर गरीब, पापी और धर्मी कें कोई भेदभाव नहीं किया।

जिस फरीसी का उल्लेख इस अनुछेद में किया गया है वह धर्मी था और शायद आराधनालय का अगुवा था। स्पष्ट था कि वह स्त्री एक पापी जीवन बिता रही थी। फरीसी अपने अच्छे रूतबे को थामे रहा। यह स्त्री एक टूटे बर्तन के समान थी। दोनों ही यीशु के पास अलग-अलग ढंग से आए। हम यीशु के पास कैसे आते हैं? यदि हम सोच रहे है कि वो फरीसी की तरह है तो हम आशा कर सकते हैं कि हम यह जान लें कि हम कहाँ खड़े हैं। फिर भी यदि हम यह कहते हैं कि हम उस स्त्री के समान हैं तो हमें फिर एक बार इस बात का मूल्यांकन करना होगा कि क्या ये सही है। क्यों? फरीसी ने कभी भी यह नहीं सोचा था कि परमेश्वर उसको अस्वीकार करेंगे लेकिन उस स्त्री ने कभी भी यह नहीं सोचा था कि परमेश्वर उसको स्वीकार करेंगे।

स्त्री को यीशु की सेवा करने की ज़रूरत महसूस हुई - उनसे बिना किसी चीज की आशा किये बस सिर्फ उसकी सेवा करो। यीशु के पैर पोंछने के लिये उसने अपने आँसू और बालों का इस्तेमाल किया। (कल्पना करो दिनभर चलने के बाद यीशु के पैर मिट्टी से भरे थे और शिमौन ने पैर धोने के लिये यींशु को पानी भी नहीं दिया था।) उसने जितना उससे हो सकता था उससे कहीं अधिक करते हुए यीशु के पैरों को चूमा और उनपर इत्र मला।

वो समय कब था जब आपने सिर्फ यीशु के प्रति अपना प्रेम और आभार दिखाने के लिये कुछ विशेष किया?

फरीसी ने वो किया जो वो बेहतर कर सकता था...न्याय! एक अगुवे होने के नाते या एक शिष्य के नाते भी हम लोगों का न्याय कर डालते हैं। तो गलत क्या है? हम अपना न्याय नहीं करते। शिमौन फरीसी के साथ यही हुआ। वह यीशु को चूमना और उन्हें पानी देना भूल गया। शिमौन ने सिर्फ उस स्त्री को ही नीची नजर से नहीं देखा परन्तु उस स्त्री से किये गए यीशु के न्याय पर उसने सवाल उठाए और संदेह किया।

यीशु ने शिमौन को कहानी क्यों सुनाई? नातान ने दाऊद को एक कहानी क्यों सुनाई? शिमौन और दाऊद न्याय करने में अच्छे थे। परन्तु वे अपना खुद का न्याय नहीं कर पाए। फिर भी दूसरों के साथ किये गए उनके न्याय का उपयोग उनको दोषी ठहराने के लिये किया गया। हमें दोषी ठहराने के लिये यीशु कौनसी कहानी सुनाएंगे?

कहानी क्या थी? कौन ज्यादा प्रेम करेगा वह जिसका ऋण कम है या वह जिसका ऋण अधिक है? हमारे कितने पाप क्षमा किये गए हैं? क्या हम ऐसा बर्ताव कर रहे हैं कि हमारे क्षमा किये गए पाप सच में बड़े थे? या फिर हम दूसरों का तुरन्त न्याय करने में जल्दबाज हैं?

वह स्त्री उस फरीसी का न्याय कर सकती थी और यीशु के प्रति उसके अतिथी सत्कार की कमी पर प्रश्न कर सकती थी। लेकिन उसने सिर्फ खुद पर और यीशु के प्रति अपने प्यार पर ध्यान दिया। परिणाम: यीशु ने उसके पाप क्षमा किये। जब तक हम क्षमा न करें हम कैदी हैं और सिर्फ यीशु ही हमें स्वतंत्र कर सकते हैं।

यीशु में सुरक्षितता की नींव है हमारा विश्वास। उस स्त्री का अपना विश्वास था और इसीलिये उसकी सुरक्षितता यीशु में थी लेकिन फरीसी का विश्वास अपने रूतबे में था और इसीलिये उसकी सुरक्षितता उसके रूतबे में थी।

अन्तत: उस स्त्री के विश्वास ने उसे बचा लिया। उसने हमें सिखाया कि अति नम्र होकर क्षमा कैसे मांगी जाती है। यीशु ने अपनी शान्ति उसे दी। उस स्त्री को क्षमा करने के लिये यीशु ने कभी कोई शर्त नहीं रखी। वह असंमजस में आई और

शान्ति के साथ चली गई।

इस स्त्री की कहानी को सुसमाचार में जगह मिली। सच में वह एक **गुमनाम नायिका** है।

उपयोग:

बप्तीस्मा के पहले और बप्तीस्मा के बाद के पापों की सूचि बनाकर आओ हम खुद को जाँचें। यह एक परीक्षा होगी कि हम क्षमा न किये गए फरीसी हैं या क्षमा किये गए स्त्री हैं।

18-01-2016

दिन 18 - एक व्यक्ति जो जन्म से अन्धा था

यूहन्ना 9:1-13

दर्द के दो पहलू

जब यीशु जा रहे थे, तब उन्होंने एक मनुष्य को देखा। वह जन्म से अन्धा था। यीशु के चेलों ने उन से पूछा, "हे रब्बी, किस ने पाप किया था कि यह मनुष्य अन्धा जन्मा? इस मनुष्य ने, या इसके माता-पिता ने?" यीशु ने उत्तर दिया, "न तो इस ने पाप किया है, और न इसके माता-पिता ने। परन्तु यह इसलिये हुआ कि परमेश्वर के काम इसमें प्रकट हों"। (यूहन्ना 9:1-3)

क्या आपके साथ कभी इस प्रकार की बातचीत हुई? आपकी राय क्या होगी? शिष्यों ने अपना ध्यान दर्द और पाप पर केंन्द्रित किया बजाए इसके कि वो इसके द्वारा परमेश्वर को काम करता देखें। हम भी यही कर सकते हैं।

क्या आपको याद है हाल ही में आपकी परिस्थिती में परमेश्वर को काम करता हुआ देखने में आप चूके हैं? किस प्रकार के विचारों से आप संघर्ष कर रहे थे?

मेरे जीवन में परमेश्वर ने यह क्यों होने दिया? संसार में बुराई क्यों है? क्या एक प्रेम करने वाला परमेश्वर इतने सारे बच्चों को भूखे पेट मरने देगा? इन प्रश्नों के बारे में हम सभी ने कुछ एक जैसी बातें सोची।

अपनी बुध्दिमत्ता से परमेश्वर ने इस बात के बारे में कि बुराई कहाँ से आती है या इसका उद्गम स्थान कहाँ है ज्यादा खुलासा न करने का निर्णय लिया।(**व्य.वि. 29:29**)

यह रहस्य हममें से कई लोगों का सफाया कर देगी और किसी घटना के लिये जो हम सोचते हैं कि परमेश्वर के कारण हमारे साथ घटी हम परमेश्वर को कभी क्षमा नहीं करेंगे और हम हमारा ध्यान अधूरी तस्वीर पर केंन्द्रित करेंगे और उस तस्वीर का दूसरा पहलू जो पूरा और सिध्द है उसे देखना भूल जाएंगे।

हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं;(**रोमियों. 8:28**)।

रोग पर ध्यान केन्द्रित करने के बजाए हमें इलाज पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिये, जो है यीशु। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि वो गलत बातों की ओर देख रहे थे। किसी पर दोष लगाने वाली बातों को देखना हमें बन्द करना चाहिये और परमेश्वर की महिमा करने की ओर देखना आरंभ करना चाहिये। दर्शाए गए परमेश्वर की महिमा को देखने के बजाए दर्द की समस्या ने उन्हें अन्धा कर दिया था। वो बड़ी आसानी से परमेश्वर के कामों को देखना चूक जाते थे। देखना चूक जाते थे। इसके बारे में एक पल के लिये सोचो। क्या आपका ध्यान अपने जीवन की या आपके आस-पास के लोगों के जीवन की

समस्याओं के दर्द को देखने में लगा है कि आप दर्शाए गए परमेश्वर की महिमा को देखना चूक रहे हो? हमारे कठीन समयों में से परमेश्वर हमारे लिये अच्छे समय लाएंगे एक मसीह होने के नाते यह एहसास ही हमें उन समयों से गुजरने की अनुमती देता है। युसुफ इस बात का सिध्द उदाहरण है, क्योंकि उसके भाईयों ने उसे बेच डाला था, वह एक गुलाम बना, जेल में डाला गया, और अन्तत: वह राजा का दाहिना हाथ बन गया (**उत्पत्ति 50:20**)। यीशु ने सबसे उच्चतम् पाप को अपनाया, एक निर्दोष व्यक्ति की मृत्यु, और उने परमेश्वर की महिमा के महानतम् कामों में बदल दिया।

उपयोग: आपके आस-पास जो दर्द है उसे आप किस नजर से देख रहे हैं?

प्रार्थना करो कि आपके कठीन समय में परमेश्वर अपना सामर्थ दिखा सकें।

19-01-2016

दिन 19 - रोमी सेनानायक

मत्ती 8:5-13 / लूका 7:1-10

एक नायक जिसने यीशु को अचंभित कर दिया

सच्चे विश्वास ने हमेशा यीशु को अचंभित किया है।
सच्चा विश्वास तब शुरू होता है जब आप यीशु के अधिकारों को समझने लगते हो।
यहाँ एक सेनानायक की कहानी है जो यीशु के पास आया और अपने सेवक को चंगा करने के लिये मदद मांगी। यीशु तुरन्त उसकी मदद के लिये तैयार हो गए- लेकिन यीशु को तब अचंभा हुआ जब उसने यीशु की मदद को अस्वीकार किया और कहा बजाए इसके आप सिर्फ यह आज्ञा दो कि मेरा सेवक चंगा हो जाए। इस सेनानायक ने यह तर्क किया कि यदि उसके जैसे व्यक्ति के पास इतना अधिकार हो सकता है तो, यीशु जो स्वर्ग से हैं उनके पास कितना ज्यादा होगा।

सेनानायक के इस विश्वास ने यीशु को अचंभित कर दिया। वह चकित हुआ कि यहूदी जो इस सेनानायक के बारे में बात करते थे (**लूका 7**) उनका भी विश्वास ऐसा न था। उन्होंने चिल्लाकर यह कहा इस्राएल में भी उन्होंने ऐसा विश्वास नहीं पाया।

सेनानायक जैसा व्यक्ति यीशु को अचंभित करे यह बात न होने के बराबर थी। वह अन्य जाति का था। इस बात में कोई शंका नहीं कि मूर्तिपूजा करते हुए वो बड़ा हुआ। वह रोमी था, जिसे यहूदियों द्वारा राजा के नियमों का पालन हो इसलिये पलिश्त में नियुक्त किया गया था। वह एक योध्दा था। रोमी सरकार के क्रूर युध्दकला में दूसरों से बेहतर प्रदर्शन करके उसने सेनानायक की पद्वी पायी था। उसके इस शिक्षण के इतिहास को देखें तो लगता है कि पवित्र शास्त्र में विश्वास के महान नायक के रूप में यह व्यक्ति अपेक्षित नहीं है।

इस विश्वास की नींव है सेनानायक द्वारा यीशु के अधिकारों की समझ। जब हम यीशु के अधिकार को समझते हैं, तब हम उनके ईश्वरत्व और सर्वोच्चता को समझते हैं- और परमेश्वर और यीशु की हमारी समझ बदल जाती है, और हमारी प्रार्थना बदल जाती है।

खुद को परखो:

1. यीशु के अधिकार के बारे में आपकी समझ क्या है? किन क्षेत्रों में आप यीशु के अधिकारों में जी रहे हो और कौनसी बातों में आप उनके अधिकार में **नहीं** जी रहे हो?

2. आपका हरदिन का पवित्र शास्त्र अध्ययन कैसा है? क्या आपका जीवन यह दर्शाता है कि आप पवित्र शास्त्र की आज्ञाओं का पालन करते हो? यदि हाँ , तो कैसे?

कार्य:

1. जिन पर आपका अधिकार है उन चीजों की सूची बनाओ - परिवार / रिश्तेदार / कलीसिया / मिनिस्ट्री...
कृपया इन क्षेत्रों में परमेश्वर ने जो अधिकार आपको दिये हैं उन्हें विस्तार से लिखो।

2. अब इसकी तुलना यीशु के अधिकारों से करो - कि कैसे आपके मार्ग में आनेवाली हर एक परिस्थितियों को संभालना और चंगाई देना यीशु के लिये इतना संभव क्यों है।

3. और अपने जीवन के उन क्षेत्रों में यीशु के अधिकारों की तुलना करो- जहाँ उन परिस्थितियों को यीशु आपकी इच्छा के अनुसार न संभालेंगे और न चंगाई देंगे, क्यों?

20-01-2016

दिन 20 - कुरेन का शिमौन

मत्ती 27:32 / मरकुस 15:21-22 और लूका 23:26

यीशु ने दिन-रात जाग के काटे थे। गतसमने से निकलकर पहले हन्ना फिर कैफा और बाद में पिलातुस से मिलने के लिये उन्हें जंजीरों सें बान्धकर चलने को मजबूर किया। उन्हें हेरादेस के पास ले जाया गया और फिर वापस राज्यपाल के पास। सैनिकों ने उन्हें कोड़े मारे और पीटा था। उनकी थकान और रक्त का बहना पहले ही गंभीर रहा होगा। उन्हें क्रूस उठाकर चलने पर मजबूर किया बाद में जिस पर उनको लटकाया जाना था। उसका वजन करीब १५ से २० किलो का था जिसे बली किये जाने वाले व्यक्ति के कंधों पर बांधा जाता था।

उनकी इस हालत में, यीशु को यह भारी क्रूस उठाकर चलना मुश्किल हो रहा था। तो, "सिकन्दर और रूफस का पिता शिमौन नामक एक कुरेनी मनुष्य गांव से आ रहा था। वह उधर से निकला। उन्होंने उसे बेगार में पकड़ा कि वह यीशु का क्रूस उठाकर ले चले"(**मरकुस 15:21**)। इस आश्चर्य के साथ, एक और व्यक्ति का इस कथन में आगमन होता है।

कुरेन पूर्वी अफ्रीका में स्थित था, जहाँ पर आज त्रीपोली और लिबिया है। कोई शक नहीं के इतने दूर देश से शिमौन फसह का पर्व मनाने के लिये यात्रा कर रहा था, इस तीर्थयात्रा के लिये वह कई वर्षों से पैसा जमा कर रहा था। उसके लिये यह यात्रा इस वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण काम रहा होगा, शायद उसके जीवन का भी। जीवन में एक बार इस प्रकार के अनुभव के लिये अपने बेटों को भी वह साथ लाया था।

इस काम के लिये उसे मजबूर करने की उसकी पहली प्रतिक्रिया के बारे में अन्दाजा लगाना ज्यादा मुश्किल नहीं है:

- आस-पास इतने लोगों के बीच से; उसी को चुनने का आश्चर्य... मुझे ही क्यों?
- उसके मूल योजना में अचानक इस अनियोजित योजना के कारण चिड़चिड़ाहट; इस बात का सामना करने की मेरी योजना तो नहीं थी।
- एक व्यक्ति जिसको रोमी सरकार और यहूदी धार्मिक शास्त्रियों की नजरों में अपराधी करार दिया गया ऐसे व्यक्ति के साथ जुड़ने के लिये अनिच्छा;
- क्रूस जो सिर्फ मुजरिमों के लिये ही हुआ करती थी उसे ढोने से सबकी नजरें उसी पर लगी होने की शर्मिन्दगी।

शिमौन के और हमारे अनुभव में विशाल अन्तर हो सकता है परन्तु प्रतिक्रियाएं अक्सर एक जैसी होती हैं।

यह हमें उस प्रतिबिंब की ओर ले जाता है कि अपने अनिवार्य क्रूस को हम कैसे संभालेंगे। शिमौन के लिये क्रूस अनापेक्षित था; हमारे लिये भी क्रूस अक्सर अनपेक्षित है। वह क्रूस का इंकार नहीं कर पाया और अन्त में हम भी नहीं कर पाएंगे। यीशु का सामना करने के बाद शिमौन के विचारों में किस प्रकार के प्रश्न घूम रहे होंगे इस बात को शायद हम कभी भी नहीं जान पाएंगे, जबकि खुद को जांचने के लिये हम इसी प्रकार के प्रश्नों का उपयोग कर सकते हैं:

- क्या हम अपने क्रूस के पार देख रहे हैं (शिमौन की तरह नहीं, जो उस समय यीशु की मदद कर रहा था) यह जानते हुए कि यदि क्रूस नहीं तो पुनरूत्थान भी नहीं?
- जिन लोगों से हम बात करते हैं विशेष कर हमारा परिवार और हमारे दोस्त, जब हम संघर्ष में गिरते हैं तो क्या उनसे हमें मदद मिलती है या फिर वो हमारे धार्मिक जीवन के विकास में एक रोड़ा बनते हैं? किसी भी मामले में क्या हम धीरज से क्रूस उठाने वाले का उदाहरण बनते हैं?
- क्या हम हमारे परिक्षाओं में धैर्यपूर्वक रूक कर पवित्र आत्मा को आव्हान देते हैं कि हमारी मदद करे और फिर हमें सिध्द बनाने के लिये उसे हमारे जीवन में काम करने की अनुमति देते हैं? यह जानते हुए कि कठिनाईयाँ आएंगी, पौलूस की तरह इन चुनौतियों का सामना करने के लिये लगातार प्रार्थना करते रहते हैं जैसा पौलूस ने, : **"अब मैं उन दुखों के कारण आनन्द करता हूं, जो तुम्हारे लिये उठाता हूं, औरमसी के क्लेशों की कमी उसकी देह के लिये, अर्थात् कलीसिया के लिये, अपने शरीर में पूरी किये देता हूं।"**(**कुलु.2:24**)
- परिक्षाओं को सहने के कारण हमें जो आशिषें मिली हैं क्या हम आतुरता से उनको बताते हैं, या फिर इस पूरे अनुभव को पीछे छोड़ देने की जल्दी में रहते हैं? जैसा शिमौन ने ज़रूर किया होगा, आगे बढ़ते हुए हमारे परिवार (विशेषकर हमारे बच्चे) के साथ, हमारे दोस्तों और वो जिनसे हमारा सामना होता है उनके साथ हमारी गवाही को बांटते हुए, क्या हम अपने अनुभव को हमें बदलने और यीशु के और करीब आने का मौका देते हैं?

यीशु के पीछे चलना, आगे बढ़ना। **लूका 9:23 यीशु ने सब से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना चाह तो वह अपने आप से इनकार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले"।**

लूका में कुरेनी शिमौन के बारे में हमें क्या कहा गया उसपर फिर से ध्यान दो: "उन्होंने उसपर यीशु का क्रूस लाद दिया कि वह उसे उठाकर यीशु के पीछे-पीछे चले"।(**लूका 23:26**) सबसे अधिक संभावना यह है कि हम यह इच्छा करते हैं (और आशा है प्रार्थना भी करते हैं) कि यह बोझ उतर जाए। और परमेश्वर से राहत मांगने में कोई बुराई नहीं है। यदि परमेश्वर हमारे दर्द को कम करता है तो हमें तुरन्त इसको स्वीकार करना और चंगाई के लिये परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिये। और यदि परमेश्वर दर्द से हमें छुटकारा नहीं दिलाता तो, हमें यह समझ लेना चाहिये कि वह इसका इस्तेमाल हमें विश्वास में या प्रेम में बढ़ने या फिर पूरी तरह से उनकी इच्छा के आधीन होने के लिये कर रहा है।

शिमौन के मामले में, यीशु ने शिमौन को अपने करीब लाने के लिये अपने क्रूस केमार्ग का उपयोग किया, वरना शिमौन का सामना यीशु से नहीं हो पाता, या संभव है मसीहत से उसका सामना नहीं हो पाता जिसमें वह कभी नहीं जुड़ पाता। शिमौन यदि यीशु के मार्ग में न आता तो सुसमाचार के संदेश पर कभी ध्यान नहीं देता। परिणामस्वरूप शिमौन के बेटे सक्रिय मसीही नहीं बन पाते (किसे पता कि कितने जीवन उन्होंने बदले?)।

आप में परमेश्वर ऐसे क्रूस देता है जिनका बोझ आप ढो सको, क्या आप इसके लिये आभारी हो और एक सकारात्मक स्वभाव रखते हो, क्योंकि धैर्य से उसे ढोने से आपका जीवना अनन्तकाल के लिये बदल जाएगा।

दिन 21 - क्रूस पर लटका अपराधी

21-01-2016

लूका 23:26-43

वह एक बेनाम चरित्र था, एक अपराधी, लेकिन एक ऐसा जो हमें अपने हृदयों में गहराई तक देखने को मजबूर करता है। अपने कंधों पर क्रूस लाद कर, उनके अपराधों की पट्टी उनपर लगाकर, सारे लोगों के सामने उन तीनों का जुलुस निकाला गया, दूसरों को यह चेतावनी देने के लिये कि जो इनकी तरह जीयेगा उसका अंजाम क्या होगा!

जब वो सभी क्रूस पर लटके थे तो इसका ध्यान उस व्यक्ति पर गया जिसका नाम यीशु था, जिसने अन्धों को आंखें दी, कोढ़ी को चंगा किया, तूफान को रोका, और यहाँ तक कि मूर्दों को जीवन दिया था! लेकिन अब कीलें ठोंककर उसे क्रूस पर लटकाया गया था, अपनी हरएक सांस के लिये लड़ता, उतना ही असहाय था जैसा वह खुद।

जैसे वह भीड़ को उसका मज़ाक उड़ाते, उसको चुनौती देते देख रहा था, लोग उससे कह रहे थे, खुद को क्रूस से बचाने के लिये एलिय्याह को बुला, यह साबित कर कि तू परमेश्वर है, वह भी उससे क्रोधित हुआ और उसका मज़ाक उड़ाया....वह निश्चित ही उसके दोस्तों और खुद को क्रूस के इस भयंकर मृत्यु से बचा सकता था! अपने सतानेवालों पर वह बिजली गिरा सकता था, या फिर एक भूचाल से अपने आपको क्रूस से आज़ाद कर लेता?!! क्या किसी कारणवश वह अपनी दैवी शक्तियां खो चुका था?

फिर यह संभावना उसके दिल को छू गई कि इस, "यहूदियों के राजा" ने ही अपने लिये क्रूस की मौत चुनी।

फिर उसने यीशु को यह कहते सुना, **"हे पिता, इन्हें क्षमा कर; क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं?"** जब उसने यह देखा कि यदि यह अपने सतानेवालों को जो उसका घात कर रहे थे क्षमा कर सकता है तो वह मान गया कि, वह परमेश्वर है!

उसका चेहरा बिगड़ गया था, खरोचों से भरा था और खून बह रहा था, आंखें पीड़ा से फटी थीं फिर भी दया से भरी थीं। उस अपराधी का दिल पिघल गया, पछतावे से भर गया। इस निर्दोष व्यक्ति का अपने सतानेवालों से प्रेम करने की योग्यता ने उसे विश्वास दिलाया। उसका मन अपने खुद के किये पापों, अपने स्वार्थीपन, परमेश्वर या मनुष्य की उपेक्षा, सामर्थ की असंतुष्ट इच्छा, उसके अनगिनत दुष्टता, के डर से भर गया....इस चेहरे ने उसे उन चेहरों की याद दिलाई जिनको उसकी क्रूरता के कारण चोट लगी, जिन आंखों में आंसू आए, वो सभी हृदय जो उसने तोड़े। इस व्यक्ति ने क्रूस पर अपने पापों के प्रति टूटा मन रखने का चुनाव करके, वास्तव में सभी टूटे हुए मन के लोगों के लिये चंगाई लाया..। उसने याद किया कि कैसे यीशु ने क्षमा किया, दया दिखाया, कैसे उस पापिन स्त्री के जीवन को रूपांतरित किया, स्त्री जो व्यभिचार के पाप में पकड़ी गई, जक्कई, पापी और चुंगी लेनेवाले....उसने भी यीशु से उस दूसरे मौके की इच्छा जताई। अपने निरर्थक जीवन की याद कर उसके पश्चाताप के आंसू बहने लगे और साथ ही उसे मृत्यु का और सदा के लिये नर्क की आग में जलाए जाने का भय भी था।

अचानक दूसरे अपराधी ने चिल्लाकर यीशु की नीन्दा की। उसे परमेश्वर से भी न डरते देख तुरन्त उसने गुस्से से उसे डांटा। उसने दीनता से यीशु को अपने राज्य में जब वो आएं तब उसे याद रखने के लिये कहा। यह शब्द उसके अन्दर बदले हुए मन को दर्शाते हैं।

जब यीशु ने उसे स्वर्ग ले जाने का वादा किया तो दिव्य क्षमा और अद्भुत अनुग्रह के अनुभव की बात से एक अविश्वसनीय आनन्द और आभारपन से वह रो पड़ा।

हम जानते हैं कि यीशु को बुरा-भला कहने में पहले यह अपराधी भी शामिल था (**मत्ती 27:39-44, मरकूस 15:32**)। अपने स्वार्थ में वो केवल यही सोच रहा था कि कैसे ये परिस्थिती उसके फायदे के लिये बदल सके, पूरे संसार के उद्धार की उसे चिन्ता नहीं थी या इस बात को वह समझ नहीं पाया था। जब चीजें हमारे मुताबिक नहीं होती, या हमारी प्रार्थनाओं का

उत्तर नहीं मिलता तब क्या हम परमेश्वर की निन्दा करते हैं? हमारे जीवन की उन "बुरी परिस्थिती" के लिये क्या हम परमेश्वर को बुरा-भला कहते हैं? क्या हम शिकायत करते, कुड़कुड़ाते और परमेश्वर से सवाल करते हैं?

लेकिन इस अपराधी के बारे में प्रशंसनीय बात यह है कि उसने क्रूस पर पश्चाताप किया। क्या क्रूस हमें हरदिन संकल्पित करता है? क्या क्रूस हमारे प्रतिदिन के जीवन का केंन्द्रबिन्दू है या क्रूस को हमने सिर्फ रविवार के प्रभु-भोज के समय के लिये अलग रखा है?

2कुरू. 5:14-15 की तरह क्या प्रतिदिन मसीह का प्रेम हमें विवश करता है, कि हम खुद का इनकार करें, जितना हो सकता है उससे अधिक करने का प्रयत्न करें, अपनी ऊर्जा का, संसाधनों का और समय का यीशु के क्रूस के पास बलिदान करें?

इस अपराधी ने बाद में अपने पापों की जिम्मेदारी ली, और सही न्याय को अपनाया। क्या हम हमारे पापों, कमज़ोरियों और गलतियों की जिम्मेदारी लेते हैं? या फिर हम दूसरों पर दोष लगाते, बजाए इसके कि अपने पापों को मानें और कबूल करें क्या हम अपने आपको सही साबित करने के लिये लड़ते-झगड़ते हैं?

मेरे बच्चों और मेरे पति से पहल करने और क्षमा मांगने के बजाए मैंने कई बार अपनी गलतियों को मानने से इनकार किया, विवाद किया और अपने आप का बचाव किया है।

इस अपराधी के बारे में और एक महान बात यह है कि उसने साहस के साथ यीशु का सच बताया, और परमेश्वर से न डरने के कारण अपने दोस्त को डांटा। पीड़ा, मृत्यु और भीड़ की तानाकशी के बीच वह बोला। क्या हम सच्चाई बताते हैं? परिणाम भुगतना पड़ सकता है फिर भी क्या हम साहस से अपना विश्वास बांटते हैं? या फिर हमें अस्वीकृती और लोगों से अलग होने का डर लगा रहता है? क्या थकान, बीमारी और बेचैनी हमें अपना विश्वास बांटने से रोकते हैं? क्या हमारा यह दृढ़विश्वास है कि हमारा जीवन और वचन बांटने से हमें कोई नहीं रोक सकता?

उस धीरजवंत अपराधी ने अपने जीवन के अन्तिम समय में एक टूटा हुआ और दीन हृदय दिखाया और यीशु ने उसे जो अनुग्रह दिया उसको स्विकार किया। क्या हम आज भी इस अनुग्रह को स्वीकार करने से पीछे हट रहे हैं? क्या हम ग्लानी, शर्म और डर में, खुद को क्षमा न करके जी रहे हैं? "भरपूर भले काम करके" किसी तरह से क्षमा प्राप्त करने के लिये क्या हम खुद को विवश पाते हैं? जो अनुग्रह हमें मिला है क्या हम उसे मुफ्त में दूसरों को बांट रहे हैं?

उपयोग:

1. परमेश्वर के प्रति आपकी यदि कोई कुड़कुड़ाहट है, या फिर किसी कारण से आप उनसे नाराज़ हैं, उसे लिखो। वचनों पर मनन कर उनके द्वारा प्रार्थना करो और अपने हृदय के लिये मदद पाओ।

2. सूची बनाओ कि क्रूस के कारण अपने प्रतिदिन के जीवन में आप ज्यादा से ज्यादा यीशु की तरह कैसे बनोगे। जिन पापों की जिम्मेदारी आपने नहीं ली है उन पापों को पहचानो। पापों को कबूल करो और जिनके खिलाफ आपने यह पाप किया है उनसे क्षमा मांगो।

3. जिससे आज तक आप अपना विश्वास नहीं बांट पाए उनके साथ आज साहस से अपना विश्वास बांटो या फिर असाधारण रीति से किसी के साथ परमेश्वर के वचनों की सच्चाई बांटो।

4. यदि आप अपनी ग्लानी से संघर्ष कर रहे हैं और परमेश्वर के अनुग्रह को स्वीकार नहीं किया है तो निर्णय करो कि खुला होकर मदद लोगे। यदि आप किसी को क्षमा नहीं कर पा रहे हो तो मदद लो और अपने रिश्ते को सही बनाओ।

दिन 22 - इथियोपियाई (कूशी) खोजा

22-01-2016

प्रेरित 8:26-40

आज हमारे पास किसी ऐसे व्यक्ति का उदाहरण है जिसने स्पष्ट रूप से परमेश्वर के निर्देश सुने और तुरन्त अमल किया। फिलिप्पुस ने यीशु के निर्देश को सुना और यरूशलेम से निकलकर सामरिया में सुसमाचार का प्रचार करने को चला गया। लोगों की भीड़ ने फिलिप्पुस के द्वारा परमेश्वर के सामर्थ को काम करते देखा और जब उन्होंने यीशु का सुसमाचार सुना तो उसपर विश्वास किया। क्योंकि फिलिप्पुस ने यीशु के निर्देशों को माना, सामरिया में कई जीवन बदल गए।

सामरिया में प्रभु के दूत ने फिलिप्पुस को क्या करने का निर्देष दिया?

("उठ और दक्षिण की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से गाजा को जाता है, और जो निर्जन प्रदेश में है")? फिलिप्पुस को निर्देश मिला और उसका पालन करने में उसने कोई हिचकिचाहट नहीं की। परमेश्वर के इस संदेश का उसने तुरन्त पालन किया। उसने न परमेश्वर से कोई प्रश्न किया और न ही कोई विवाद। उसने परमेश्वर से यह भी नहीं कहा कि मैं बाद में जाऊंगा, परमेश्वर ने उसे जहाँ जाने के लिये कहा था वह तुरन्त वहाँ गया।

जब परमेश्वर स्पष्ट रूप से आप से कुछ करने के लिये कहते हैं तब आप क्या करते हो? क्या आप तुरन्त आज्ञापालन करते हो या फिर बहाने बनाकर परमेश्वर के निर्देशों को मानने में देरी करते हो?

इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारी उम्र क्या है, यह जान पाना कैसे संभव है कि जगत का परमेश्वर हमसे बात कर रहा है? हम जान सकते हैं; क्योंकि हम सोचते हैं कि परमेश्वर हमसे यह कह रहे हैं, उसका तालमेल पवित्र शास्त्र के शिक्षण से होना चाहिये। जैसे वो रेगिस्तान से गुजर रहा था उसने रथ को दौडाते हुए घोड़ों की आवाज़ सुनी जो उसीकी दिशा में आ रहा था।

उस रथ में एक व्यक्ति बैठा था जो इथियोपिया से आ रहा था। वह एक महत्वपूर्ण अधिकारी था, वह इथियोपिया की रानी कन्दाके का खजांची था। यह व्यक्ति इथियोपिया से एक लम्बा सफर तय कर परमेश्वर की आराधना करने के बाद यरूशलेम से वापस जा रहा था। यह व्यक्ति अभी तक यीशु का अनुयायी नहीं था, लेकिन वह परमेश्वर को खोज रहा था और वही करना चाहता था जो परमेश्वर को आनन्द दे।

जब फिलिप्पुस ने देखा कि यह व्यक्ति परमेश्वर का वचन पढ़ रहा है, उसे इतनी बुध्दि थी कि कौनसी बात पूछना सही होगा। जब हम परमेश्वर के निर्देशों को मानते हैं, तो वह हमें बुध्दि भी देता है कि ऐसी परिस्थितियों में हम क्या कहें।

इथियोपियाई यशायाह 53 पढ़ रहा था।
फिलिप्पुस ने इस वचन का उपयोग करते हुए शुरूआत की और उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।

क्योंकि फिलिप्पुस ने उसे वचन समझाया, अब वह समझ गया था। उसने बप्तिस्मा लिया। प्रभु यीशु में विश्वास करने के कारण इस इथियोपियाई व्यक्ति का जीवन हमेशा के लिये बदल गया।

कल्पना करो कि यीशु में विश्वास रखने के कारण, उसने कितने लोगों का जीवन बदला होगा।
हम नहीं जानते कि हमारे आस-पास के लोगों के जीवन में परमेश्वर कैसे काम कर रहे हैं। इस सप्ताह हम यह प्रार्थना करें कि हर दिन परमेश्वर के निर्देश को हम ध्यान से सुन सकें और वो हमसे जो कहते हैं उसको जल्दी से करें।

उपयोग:

आत्मा की आवाज़ सुनो

आत्मा के पीछे चलो और किसी प्रभावशाली व्यक्ति से मिलो

आपके जीवन के उन रूकावटों को लिखो जो आपको परमेश्वर के वचन मानने से रोकते हैं।

जब फिलिप्पुस ने देखा कि यह व्यक्ति परमेश्वर का वचन पढ़ रहा है, उसे इतनी बुध्दि थी कि कौनसी बात पूछना सही होगा। जब हम परमेश्वर के निर्देशों को मानते हैं, तो वह हमें बुध्दि भी देता है कि ऐसी परिस्थितियों में हम क्या कहें।

इथियोपियाई यशायाह 53 पढ़ रहा था।
फिलिप्पुस ने इस वचन का उपयोग करते हुए शुरूआत की और उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।

क्योंकि फिलिप्पुस ने उसे वचन समझाया, अब वह समझ गया था। उसने बप्तिस्मा लिया। प्रभु यीशु में विश्वास करने के कारण इस इथियोपियाई व्यक्ति का जीवन हमेशा के लिये बदल गया।

कल्पना करो कि यीशु में विश्वास रखने के कारण, उसने कितने लोगों का जीवन बदला होगा।
हम नहीं जानते कि हमारे आस-पास के लोगों के जीवन में परमेश्वर कैसे काम कर रहे हैं। इस सप्ताह हम यह प्रार्थना करें कि हर दिन परमेश्वर के निर्देश को हम ध्यान से सुन सकें और वो हमसे जो कहते हैं उसको जल्दी से करें।

उपयोग:

- आत्मा की आवाज़ सुनो
- आत्मा के पीछे चलो और किसी प्रभावशाली व्यक्ति से मिलो
- आपके जीवन के उन रूकावटों को लिखो जो आपको परमेश्वर के वचन मानने से रोकते हैं।

23-01-2016

दिन 23 - दोरकास / तबीता

अपने जीवन को अर्थपूर्ण बनाने के लिये आपको दूसरों को प्रेम करने में खुद को लवलीन करना है। हम मसीह का जीवन जानते हैं। हम उनके सभी मित्रों के जीवन के बारे में सीखते हैं। अपने जीवन और मरण में उसने सुनिश्चित किया कि वे सभी अपना जीवन दूसरों के लिये अर्पण करें। आप जानते हो, कि इस संसार में सभी को यह पता है कि एक दिन वो मरेंगे। लेकिन दु:ख की बात यह है कि इसपर कोई विश्वास नहीं करता। यदि आप जानते हो कि आप मरने वाले हो और आप उसके लिये तैयार हैं, तो जब तक जीवित हैं तब तक आप जीवन में अधिक लवलीन रहोगे। यही कहानी तबीता या दोरकास की। युनानी भाषा में इसका अर्थ है एक "सुन्दर छोटा मृग"। उसका जीवन यीशु के जीवन की कीमत करना सिखाता है।

प्रेरित 9:36-42

यह तबीता के बारे में बात करता है और यह कि, "वह सदा भले काम करती थी," "वह हमेशा गरीबों की सहायता करती थी"। कई बार हम इसे पढ़ते हैं अच्छा महसूस करते और अगले वचन की ओर बढ़ जाते हैं। मुझे लगता है कि उसने **हमेशा भले काम किये**? वचन नही कहता **कभी-कभी** पर **हमेशा**। अब यदि आप माता हो और आपके घर में बच्चे हैं तो क्या आप **हमेशा** धीरजवंत रहोगे? **हमेशा** भलाई करोगे? यह संभव नहीं लगता। आप विवाहित हो। क्या आप **हमेशा** अपने पति के साथ अच्छे और आदर से रहते हो? **हमेशा** प्रेम से? यह कैसे संभव है? आप पड़ोस में रहते हो। क्या आप अपने पड़ौसी से **हमेशा** अच्छे से रहते हो? मकान मालिक के साथ **हमेशा** अच्छे, किराएदार के साथ **हमेशा** अच्छा? आप ऐसे कैसे रह सकते हो? यदि आप सास बहू हैं- **हमेशा** एक दूसरे के साथ अच्छा? यह असंभव लगता है। लेकिन इस स्त्री ने **हमेशा** अच्छा ही किया। इसने मुझे सोचने पर मजबूर किया। उसके बारे में पहली बात जो हमने सीखी वह है:

1.उसने एक परिवार बनाया - यह बात स्पष्ट नहीं है कि उसका अपना कोई परिवार था लेकिन अपने आस-पास के लोगों में उसने एक प्रेम का बन्धन बान्धा। अब तबीता पर यह बात स्पष्ट थी कि उसे एक परिवार की आवश्यकता है क्योंकि उसे पता था कि वह बीमार पड़ने वाली है। परिवार का अर्थ पति और बच्चे होना नहीं है। परिवार एक अनुभव है। तबीता अपने जीवन में बहुत उदार थी। याफा में रहनेवाले मसीहियों के बीच वह सबसे अधिक सम्मानित स्त्री थी।

इफिसियों ५:२१-३३ में पवित्र शास्त्र इसी के बारे में बात करता है। यदि आप दूसरे इन्सान से प्रेम और आदर नही कर रहे हो तो आप बड़ी मुसीबत में पड़ने वाले हो। विवाहित जीवन में एक समान आदर्श और दृढ़विश्वास होना बहुत महत्वपूर्ण है। और मेरे हिसाब से सबसे बड़ा आदर्श जो है वो है अपने विवाह में 'आपका विश्वास'। क्या आपको अपने विवाहित जीवन पर विश्वास है? क्या हम अपने परिवार की, अपने बच्चों की और अपने पती/पत्नि की कीमत करते हैं? आपकी मृत्यु के बाद भी आप जीवित रहें ऐसा सोचने वाला आपके पास कौन होगा? सभी को तबीता की कमी महसूस हो रही थी। वह मर चुकी थी। लेकिन बहनें उससे बिछड़ना नहीं चाहती थीं। वो उसे जीवित चाहती थीं। हमारे कितने लोग ऐसे होंगे जो हमारे मरने के बाद भी चाहेंगे कि हम जीवित रहें? क्या आपके चाहनेवाले आपकी मृत्यु के बाद आपकी कमी महसूस करेंगे? हमें सही में सोचना होगा कि-क्या हम वास्तव में ऐसी यादें बना रहे हैं? तबीता का जीवन यही था।

2.उसने अपनी पूरी ताकत लोगों में लगा दी - आपने क्या इस बात पर ध्यान दिया के लोगों के प्रति वो कितनी लवलीन थी? पतरस एक महान प्रेरित था। वह यरूशलेम में था। लेकिन यह स्त्री उसकी कलीसिया के लिये इतनी महत्वपूर्ण थी कि पतरस को यरूशलेम से आना पड़ा। वो चाहते थे कि पतरस यह देखे कि उनकी कलीसिया में कितनी महान एक मसीही थी। उसने निस्वार्थ प्रेम की कीमत की। एक मसीही होने के नाते शायद इसी एक बात में उसने विश्वास किया था। और कल्पना करो कि पहली शताब्दी की कलीसिया में ये कैसा समय रहा होगा। मसीही होने के कारण कई लोगों को जान से मारा जा रहा था, उनकी सम्पत्ति छीन ली गई थी, कई लोगों को बन्दी बनाकर रोम ले जाया गया था। मसीही होना खतरे के खाली नहीं था। इन सब के बीच में उसने कहा, "मुझे दूसरों के लिये जीना है"।

प्रेम बहुत अलग है। कोई सौदा नहीं। प्रेम वह है जब आप दूसरों की परिस्थिती के लिये ऐसे चिन्तित हैं जैसे आप अपने खुद की परिस्थिती के लिये होंगे।

यूहन्ना 15:9-13 मसीहियत के बारे में क्या कहता है?-

जो तुम्हारे पास है वह दूसरों को अर्पण करो। यह पैसे के बारे में नहीं परन्तु समय के बारे में है। इसका अर्थ है चिन्ता। इसका अर्थ है बांटने की तुम्हारी योग्यता। दूसरों को खुश करना। अपना जीवन किसी ऐसे बात के लिये बिताओ जिसका कोई मकसद और अर्थ हो। तबीता ने अपने लिये कुछ नहीं रखा। उसने सिर्फ दिया। लोगों को देने में उसका ह्रदय बहुत खुला था। कभी-कभी हम सोचते हैं कि लोगों की समस्याओं को मैं क्यों सुनूं मेरे पास मेरी समस्याएं ही बहुत हैं। लेकिन यह बहुत योग्य काम है। जब उनकी कुछ समस्या तब उनके चेहरे पर मुसकुराहट लाना, उनको सुनना वास्तव में बहुत कीमती है। जब उनके पास कोई आशा बाकी नहीं रह जाती और तब आप पवित्र शास्त्र खोलकर उन्हें कुछ बातें सिखाते हैं- इसका उनके लिये कुछ मतलब होता है।

3.वो चाहती थी कि दूसरे जियें - हालांकि जिनसे वो प्रेम करती थी उन लोगों का एक समुदाय उसने बनाया था, फिर भी उसे लोगों की बहुत ज़रूरत थी। अपने जीवन में किसी बात का उसे पछतावा नहीं था। उसके जीवन में आत्मदया के लिये कोई जगह नहीं थी। इसीलिये जब उसकी मृत्यु हुई लोग वास्तव में उसकी कमी महसूस करने लगे। फिर मैंने सोचा यदि वह एक कड़ुवी, बुरा माननेवाली और क्रोधी इन्सान होती तो सोचो कि क्या लोग उसे वापस जीवित पाना चाहते? हमारे मरने के बाद लोग हमारे बारे में क्या सोचेंगे यह जानना बहुत ही दिलचस्प होगा। मैं एक मिनट के लिये अपनी आंखें खोलकर यह देखना और सुनना चाहूँगी कि लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं। यह हमारे जीवन की कई बातों को सामने लाएगा।

कभी-कभी हम चाहते हैं कि हमारे जीवन में लोग न हों। हम बुरा मान जाते हैं और क्षमा नहीं करते। कभी-कभी हम लोगों को क्षमा नहीं कर पाते क्योंकि हम खुद को क्षमा नहीं कर पाते। वो कौनसी बातें हैं जिनके लिये हमें अपने आप को क्षमा करना है? हमारे जीवन में जो काम हम नहीं कर पाए उनके लिये हमें अपने आपको क्षमा करना है। या फिर उन बातों के लिये जो हम सही से नहीं कर पाए।

मृत्यु एक जीवन को समाप्त कर देती है पर रिश्तों को नहीं। आज तबीता से प्रेरणा पाकर, क्या आप यह जान पाए हैं कि चिन्ता और संदेह करके आपने अपना समय बर्बाद किया होता? लोग ऐसा बर्ताव करते हैं जैसे कि मृत्यु संसर्गजनक है। मृत्यु स्वाभाविक है। हमें सिर्फ यही करना है कि जब तक हम जीवित हैं जीवन में शान्ति बनाए रखें, और फिर उन यादों का बनाना-और फिर यीशु के प्रेम के द्वारा प्रेरित होकर लोगों के दिलों को छूने और उन्हें पुष्ट(मजबूत) बनाने के बाद इस संसार से चले जाना।

चुनौती: विशेष रूप से आज अपने परिवार को प्रोत्साहन दो। इस सप्ताह प्रोत्साहन देने के लिये समय निकालो; **1**. सहकर्मी को, **2**. पड़ौसी को, **3**. एक रिश्तेदार को, **4**. एक दोस्त को, **5**. एक अजनबी को।

24-01-2016

दिन 24 - फिलिप्पी दारोगा

प्रेरित 16:16-20

फिलिप्पी में दुष्टात्मा से पीड़ित इस स्त्री को पौलूस ने बचाया। उसके मालिकों ने शहर में हंगामा खड़ा कर दिया। पौलूस और सीलास के कपड़े फाड़े, बेंत से उनको बहुत मारा और बन्दीगृह में डाल दिया। फिलिप्पी दारोगा से ध्यान से उनकी रखवाली करने को कहा। उसने इस गम्भीर रूप से घायल और खून बहते हुए लोगों के पैरों को लकड़ी और ज़ंजीरों से बान्धकर भीतरी कोठरी में डाल दिया। पौलूस और सीलास परमेश्वर के भजन गा रहे थे और प्रार्थना में परमेश्वर की महिमा कर रहे थे। वहाँ के कैदी लोग इनको सुन रहे थे। प्रचार और आराधना के लिये क्या समय और जगह!

पौलूस और सीलास के सताव को आप कैसे देखते हैं? परमेश्वर ने इन लोगों को इतने दर्द से क्यों गुजरने दिया?

उस समय के बारे में सोचो और प्रार्थना करो जब परमेश्वर का काम करने के कारण आप पर सताव हुआ।

जब पौलूस और सीलास दोनों ही ज़ख्मी, थके, बिना नींद और तकलीफ में थे और लकड़ी और ज़ंजीरों से बन्धे रात के उस पहर में भजन गा रहे और प्रार्थना कर रहे थे - उनके बारे में आप क्या सोचते हैं?

क्या आप अपनी पीड़ा और विपत्ती में प्रार्थना और आराधना करते हैं?

पौलूस और सीलास किस बात के लिये प्रार्थना कर रहे थे? क्या वो अपने स्वतंत्रता के लिये प्रार्थना कर रहे थे? यदि ऐसा था तो जब परमेश्वर ने उनकी ज़ंजीरों को तोड़ा और बन्दीगृह के द्वार को खोला तो वो वहाँ से निकल क्यों नहीं गए? जब दण्डाधिकारियों ने उन्हें जाने को कहा तो वो क्यों नहीं गए?

उस दिन परमेश्वर ने एक चमत्कार किया। वो चमत्कार क्या था? क्या वह भुचाल था? क्या वह अन्यजाती के दारोगा के परिवार का उध्दार था?

पौलूस और सीलास ने परमेश्वर के चमत्कार का उपयोग कैसे किया?

दारोगा को यह कैसे पता था कि पौलूस के पास उसके प्रश्न का उत्तर है? (फिलिप्पी में पौलू और सीलास क्या प्रचार कर रहे थे इसके बारे में जानने के लिये **वचन 17** पढ़ो)

पौलूस का उत्तर क्या था?

फिलिप्पी दारोगा ने क्या प्रश्न पूछा? (**व.29**)

परमेश्वर का वचन सुनने के बाद उसने क्या किया?

उसने ऐसा क्यों किया?

पश्चाताप के बाद पौलूस और सीलास के प्रति उसके स्वभाव में क्या परिवर्तन आया?

वह और उसके परिवार ने उसी रात को बप्तिस्मा क्यों लिया? एक अच्छे समय और जगह का इन्तजार उन्होंने क्यों नहीं किया? (हो सकता है एक रविवार को जब फिलिप्पी की सारी कलीसिया एक साथ मिलती थी तब)। बप्तीस्मा के लिये सही समय कब है?

अब जबकि हम इतनी दूर आ गए हैं आपको क्या लगता है कि पौलूस और सीलास उस रात किस बात के लिये प्रार्थना कर रहे थे?

लोगों को हम कैसे प्रचार करते और कैसे गवाही बनते हैं? क्या हम उध्दार के गवाह हैं?

वो कौनसे लोग हैं जिनके लिये आज हम प्रार्थना कर रहे और उनके गवाह हैं?

उपयोग:

उन लोगों के नाम लिखो जिनके लिये आप प्रार्थना कर रहे थे या उनका उध्दार चाहते हैं?

प्रार्थना करो कि परमेश्वर आपको उन लोगों तक पहुँने के लिये मौका, साहस दें और चमत्कार करें।

25-01-2016

दिन 25 - अपुल्लोस

प्रेरित 18:24-28, 19:1

अपुल्लोस एक प्रचारक, क्षमाप्रार्थी और कलीसिया का अगुवा था और प्रेरित पौलूस का मित्र था। वह मिस्र में सिकन्दरिया से था, जो रोमी साम्राज्य का मिस्र में दूसरे दर्जे का महत्वपूर्ण शहर था, एक महान विश्वविद्यालय का घर और समृध्द यहूदी लोगों से भरा था। अपुल्लोस एक विद्वान, व्याख्यान देनेवाला और बहस करने वाला था और फिर यीशु के जीवन, क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरूत्थान के बारे में जानने के बाद, वह पूरी तरह से सुसज्ज हुआ और यीशु के बारे में इस रीति से प्रचार करने लगा जिसका विवरण "सुवक्ता", "वचनों को जाननेवाला", "आत्मा में उत्सुक" जैसे शब्दों से किया गया। वह "ठीक-ठीक प्रवचन सुनाता" और "आराधनालय में निडर होकर सिखाता था"।

सिकन्दरिया में अपने घर से बहुत दूर, इफिसुस में अपुल्लोस ने यीशु के बारे में प्रचार किया। वह एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति था लेकिन बप्तिस्मा के बारे में उसे पूरा ज्ञान न था। सुसमाचार को और गहराई से समझने के लिये उसे किसी के मदद की ज़रूरत थी।

प्रिस्किल्ला और अक्विला ने अपुल्लोस को स्थानीय आराधनालय में प्रचार करते सुना और उसे अपने घर पर आमंत्रित किया - एक चतुर परामर्शक के रूप में। बजाए इसके कि लोगों के सामने उसकी गलती बताते या फिर उसके शिक्षण को चुनौती देते, उन्होंने प्रेमपूर्ण संगति के महौल में उन्होंने उसके साथ रिश्ता जोड़ा। परमेश्वर के वचनों को स्पष्ट रूप से उसे समझाकर उन्होंने उसका मार्गदर्शन किया।

इस जोड़े ने घर जाकर प्रचारक की समालोचना नहीं की। अपने पड़ौसियों के साथ उसके गलत शिक्षण के बारे में निन्दा नहीं की। बजाए इसके वो सीधे उसके पास गईं और अपना समय देकर सुसमाचार की मिनिस्ट्री के लिये प्रेम से एक दोस्त और एक सहयोगी पाया।

अपुल्लोस ने प्रिस्किल्ला और अक्विला से सीखा और जाकर महान जोश और अचूकता के साथ प्रचार करने लगा। उसे इस रीति से सही शिक्षा दी गई जिसने उसे एक प्रभावशाली मिनिस्ट्री के लिये प्रोत्साहन और ताकत दी।

यदि हम दूसरों को अधिक प्रेम की संगती में मार्गदर्शन देंगे तो हमारा समाज / कलीसियाएं कैसी होंगी? साथ आकर लोगों के जीवन में अपना समय देने का चुनाव करो!

अपुल्लोस से कौनसे महान गुण हम सीख सकते हैं?

जब आप गलत हो और आपको आपकी गलती बताई जाती है, तब क्या आपकी आत्मा दीन होती है?

सुसमाचार का प्रचार करने के लिये क्या आप अपुल्लोस की तरह निडर हो?

अखाया में अपुल्लोस कितना मददगार साबित हुआ(व.27,28)? जिस मिनिस्ट्री के आप भाग हो क्या उसके लिये आप एक महान मददगार हो? मिनिस्ट्री में बेहतर रूप से आप कैसे मदद कर सकते हो? क्या आप दूसरों से इस बारे में बात कर सकते हो कि कैसे आप मिनिस्ट्री में और अधिक मदद कर पाओगे?

प्रार्थना:

परमेश्वर एक दूसरे के प्रति हमें करूणा दो ताकि हम प्रेम से सच बोल सकें। होने दे कि हम प्रोत्साहन भरे शब्दों से गलतियां बताएं। हमें मदद करो कि हम एक दूसरे के लिये समय निकालें और प्रेम से सही बात बताने में ज्यादा ध्यान दें। जब मेरी गलती बताई जाए तो उसे मानने के लिये एक दीन आत्मा देकर मेरी मदद करो। और कृपा करके मुझे मार्गदर्शन दो ताकि मैं अपने मिनिस्ट्री के सभी लोगों के लिये एक महान मददगार बन सकूँ। आमिन।

26-01-2016

दिन 26 - तुखिकुस

एक प्रिय भाई

तुखिकुस नए नियम में पौलूस का एक साथी है। पांच बार उसका उल्लेख किया गया है (**प्रेरित 20:4**, **कुलू. 4:7**, **इफि.6:21**, **2तिमु. 4:12**, **तीतुस 3:12**)।

पौलूस के तीसरे धर्मप्रचार (मिशनरी) यात्रा में (**प्रेरित 20:4**) में 6 और लोगों के साथ तुखिकुस उसके साथ जुड़ा (**प्रेरित 18:23**, **प्रेरित 21:26**) जिसमें सोपत्रुस, अरिस्तर्खुस, सिकुन्दस, गयुस, तीमुथियुस और त्रुफिमुस। पौलूस के साथ यात्रा करके कलीसियाओं को प्रोत्साहन देते और मजबूत बनाते हुए वह यरूशलेम तक गया। तुखिकुस के लिये यह एक बड़ी वचनबध्दता थी, फिर भी उसने इस बड़े खतरनाक कार्य में भाग लेने का चुनाव किया। वह अपने परिवार, शहर और लोगों से दूर जाकर सेवा करने का इच्छुक था।

आपके जीवन के इस मोड़ पर परमेश्वर के प्रति आपकी वचनबध्दता कैसी है?

अपने आपको तुखिकुस की जगह पर रखकर सोचो कि यह जानते हुए भी के पौलूस के साथ जाना मेरे जीवन को खतरे में डालना है, क्या मैं जाता? परमेश्वर का राज्य बनाने के लिये मैंने कौनसी धर्मप्रचार यात्राएं की हैं? हालांकि मैं एक कलीसिया का मुख्य अगुवा नहीं हूँ फिर भी क्या मैं दूसरे शहर में जाकर कलीसिया को मजबूत बनाने का काम करूंगा?

मेरे जीवन के इस मोड़ पर क्या मैं अभी एक धर्मप्रचार यात्रा पर जाऊंगा? परमेश्वर मुझे कहाँ बुला रहे हैं?

तुखिकुस के लिये प्रेरित पौलूस और चिकित्सक लूका जैसे भाईयों के सानिध्य में रहना बहुत ही बढ़िया रहा होगा। भाईयों के इस गुट ने एक दूसरे पर कैसे प्रभाव डाले होंगे इसकी कल्पना हम कर सकते हैं।

मैं किस तरह के लोगों के सानिध्य में रहता हूँ? उनका मुझ पर क्या असर पड़ रहा है?

इफिसियों 6:21-22 और कुलुसियों 4:7-9 पढ़ो

दूसरे भाईयों के साथ पौलूस बन्दीगृह में है। तुखिकुस को संदेशवाहक के रूप में पौलूस और दूसरे भाईयों के बन्दीगृह में होने और उनकी हालत कैसी है इसके बारे में बताने और उन्हें प्रोत्साहन देने के समाचार के साथ दूसरी कलीसियाओं में भेजा गया।

पौलूस तुखिकुस का उल्लेख, "एक प्रिय भाई, एक विश्वासी कार्यकर्त्ता और प्रभु में विश्वासयोग्य एक सेवक" के रूप में करता है।

दूसरे भाई-बहन किस रूप में देखते हैं या मेरे बारे में वो क्या कहेंगे? एक प्यारा भाई/बहन? प्रभु में एक विश्वासयोग्य सेवक? प्रभु में एक सह-सेवक?

आज मुझे किस बात में बदलना है?

2तीमू.4:12 और तीतुस 3:12 पढ़ो
जब पौलूस ने किसी को एक कलीसिया में भेजने के बारे में सोचा, तुखिकुस भाईयों में एक विश्वासयोग्य भाई था जिसे उसने चुना। वह विश्वासयोग्य और भरोसेमन्द था। उसके नाम का यहाँ उल्लेख यह बताता है कि पहली शताब्दी की कलीसिया में तुखिकुस एक मुख्य लवलीन सेवक था।

मुझमें कितना सेवाभाव है? मुझे किस बात ने रोके रखा है? क्या वो और लोग हैं या **आप** हो जो काम कर रहे हो?
कई ऐसे छोटे-छोटे तरीके हैं जिसके द्वारा आप सेवा कर सकते हैं- दूसरे भाई के साथ प्रार्थना करना, दूसरों को मिलना, प्रोत्साहन देना, बिमारों की सेवा, दु:खी को सांत्वना, खाना बनाना, दूसरों को घर पर आमंत्रित करना, परिचायक (अशर), सभागृह में सब सही जगह पर रखना, सजावट.....आज से ही सेवा करना शुरू करो!

चुनौती: धर्मप्रचार के काम में अपना नाम लिखाओ। दूसरे शहर में वहाँ के भाई बहनों को प्रचार करने और मजबूत बनाने के लिये धर्मप्रचार की यात्रा पर जाओ (एक सप्ताह, एक महिना, एक साल - आप चुनो)।

27-01-2016

दिन 27 - तीतुस

परिचय:
तीतुस एक अन्य जाति (यूनानी) का व्यक्ति, पौलूस द्वारा मसीही बना और पौलूस की मिनिस्ट्री में एक महत्वपूर्ण मददगार। तीमूथियुस और कुछ दूसरे लोगों के साथ तीतुस पौलूस का खास व्यक्ति लगता है जिन पर मुश्किल कामों को करने और धार्मिक सहायता के लिये पौलूस निर्भर था।

मसीही बनने के बाद की - मुख्य घटनाएं
गलातियों 2:1-3 - पौलूस के साथ यरूशलेम को गया, अन्य जाति पर परमेश्वर के अनुग्रह के उदाहरण के रूप में।

2कुरिन्थियों 8:16-18 - पौलूस के द्वारा अपने प्रतिनिधि के रूप में चुना गया ताकि जाकर कुरिन्थ की कलीसिया को चुनौती भरा पत्र पहुँचाए।

तीतुस 1:4-5 - त्रेते में छोड़ दिया ताकि वहाँ की कलीसिया को मजबूत करे और विकास करे।

2तीमुथियुस 4:10 - अन्तिम रेकॉर्ड उसे दलमतिया में सेवा करते बताता है

विचार करने के प्रश्न:

1. अन्यजाति के सभी रूपांतरित मसीहियों में से पौलूस ने अपने साथ यरूशलेम चलने के लिये तीतुस को ही क्यों चुना?
2. जो चुनौतियां पौलूस कुरिन्थ की कलीसिया को (पत्र के माध्यम से) दे रहा था, उसे उन तक पहुँचाने के लिये पौलूस ने तीतुस को ही क्यों चुना और फिर लौटकर उनकी प्रतिक्रिया भी बताएगा इसके लिये उस पर निर्भर भी रहा; क्यों? आपको क्या लगता है?
3. अपनी जगह तीतुस को त्रेते में छोड़ने के लिये पौलूस ने तीतुस पर भरोसा क्यों दिखाया?
4. पौलूस और तीतुस के रिश्ते का विविरण आप कैसे दोगे?
5. तीतुस के तीन असाधारण चरित्रों को लिखो जिसने उसे एक सक्षम और साधन-सम्पन्न अगुवा बनाया।

उपयोग:

धार्मिक रूप से अन्धी दुनिया के सामने परमेश्वर के एक दिखाई देनेवाले रूपांतरण का उदाहरण हम कैसे बन सकते हैं?

तीतुस के किस चरित्र की आप नकल करना चाहेंगे?

हम परमेश्वर के काम के लिये साधन-सम्पन्न कैसे बन सकते हैं?

28-01-2016

दिन 28 - सीलास

हर तुफान से गुजरकर मजबूत बनना

हम प्रेरित १५:२२ के वचनों में सीलास से मिलते हैं जहाँ पर वा यीशु के पहले शताब्दी की कलीसिया का एक सक्रिय अगुवा था। कलीसिया असंमजस के तूफान से गुजर रही थी(गलत शिक्षण), जो यहूदी मसीहियों ने फैलाया था, अन्यजाति के रूपांतरित लोगों को उध्दार पाने के लिये खतना करने पर विवश कर रहे थे। पौलूस और बरनबास के साथ सीलास को चुना गया कि जाकर अंताकिया की कलीसिया को धर्ममहासभा के निर्णय के बारे में बताए; और वचन ३०-३२ बताता है कि कैसे परमेश्वर ने अंताकिया कलीसिया के भाई बहनों को प्रोत्साहन देने और मजबूत बनाने में भविष्यद्वक्ताओं जैसा उनका उपयोग किया। सीलास पहली शताब्दी के दूसरे अति प्रसिध्द अगुवों जैसा नहीं था; वह अब तक शायद एक गुमनाम नायक के समान था, जो कलीसिया की सेवा करता था। लेकिन हम देखते हैं कि वह नीचे ओहदे पर रहकर भी पौलूस और बरनबास के साथ जाकर परमेश्वर योजना को पूरा करने के लिये काम करना चाहता था।

क्या आप सीलास का हृदय देख पा रहे हैं? ओहदे की चिन्ता नहीं, मनुष्यों पर नहीं पर परमेश्वर पर ध्यान केन्द्रित।

उसके जीवन में पहली प्राथमिकता थी परमेश्वर का राज्य। (**मत्ती 6:33**)

क्या आप उसे अपना बेहतर देते देखते हैं या फिर बस यूँ ही दूसरों के साथ घूमता फिरता?

सोचो कि कलीसिया में आप कैसे अपने भाईयों और बहनों को प्रोत्साहित और मजबूत कर सकते हैं?

अपने जीवन में या फिर जिन्हें हम जानते हैं उनके जीवन के अलग-अलग तूफानों में क्या हम सीलास की तरह मजबूती से खड़े रहेंगे?

कहानी यहीं समाप्त नहीं होती है। पौलूस के दूसरे धर्मप्रचार यात्रा में उसके साथ जाने के लिये सीलास को चुना गया। **प्रेरित 15:40**...सुसमाचार सुनाने के लिये सीलास भी पौलूस की तरह संकल्पित था।

प्रेरित 16:22-34 ....फिलिप्पी शहर में हमने सताव के दूसरे तूफान के बारे में पढ़ा जहाँ उन्हें उन्हें मारा गया, कोड़े मारे गए और बन्दीगृह में डाला गया। परमेश्वर पर दोष लगाने के बजाए हम देखते हैं कि पौलूस और सीलास भजन गा रहे हैं और परमेश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं।

थिस्सलुनीके में उनको एक भीड़ का सामना करना पड़ा जो उन्हें जान से मारना चाहते थे।(**प्रेरित 17:4-5**) वो बिरीया नगर को भाग गए और वहाँ भी विरोध का सामना किया(**प्रेरित 17:10-14**)

कुरिन्थ में फिर उन्हें दुरूपयोगी यहूदियों का सामना करना पड़ा (**प्रेरित 18:5-8**)

इन सभी तूफानों में सीलास के लिये सबसे बड़े थे यीशु और उनका कार्य, अपने जीवन में आए किसी भी तूफान से बड़ा। हर तूफान में वह आत्माओं को जीतने का आनन्द मनाता था जो शारीरिक दर्द की पीड़ा में जी रहे थे।

जब हम हमारे जीवन में परिक्षाओं और तूफानों में पड़ते हैं तो कैसी प्रतिक्रिया दिखाते हैं? क्या हम दोषारोपण का खेल खेलते हैं?

1पतरस 5:12 को छोड़ और किसी भी वचनों में सीलास के बारे में अधिक निष्कर्ष नहीं दिया गया है जहाँ पौलूस कहता है कि वह एक, "विश्वासयोग्य भाई"।

ध्यान दो कि परमेश्वर अपने नाम की महिमा के लिये सीलास जैसे अनजाने और गुमनाम लोगों का उपयोग करते हैं। उनकी इच्छा है कि उसी तरह आपका और मेरा भी उपयोग करें। क्या आप उनकी इच्छा के आधीन होने की इच्छा रखते हैं?

परमेश्वर हमारे योग्यता से ज्यादा हमारे उपलब्धता को देखते हैं। परमेश्वर के हर काम के लिये सीलास हर समय और हर परिस्थिती में तैयार था। वह किस ओहदे पर वह सेवा कर रहा है इस बात से उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था परन्तु उसने अपना बेहतर दिया और "एक अच्छा और विश्वासी सेवक" कहलाया।

कार्य:

अपने जीवन में जिन बुरे से बुरे तूफानों का सामना आपने किया और कर रहे हैं जिसने आपको परमेश्वर के और करीब धकेला उन तूफानों के लिये प्रार्थना कर परमेश्वर का धन्यवाद करो।

निर्णय करो कि आप परमेश्वर के लिये और अधिक उपलब्ध रहोगे ताकि अपने कार्य के लिये वो आपका उपयोग कर सकें।

आपके पारिवारिक गुट में आने वाले नये दोस्त के साथ पवित्र शास्त्र का अध्ययन करो या फिर अध्ययन में बैठो।

आज किसी को प्रोत्साहन दो और मजबूत करो।

परमेश्वर को आपके लिये यह कहने दो, "एक अच्छा और विश्वासी सेवक"

दिन 29 - डॉ.लूका

29-01-2016

इतिहास

निश्चित ही एक यहूदी नहीं परन्तु उस समय के यूनानी संस्कृती में पला। यह एकमात्र रूपांतरित यूनानी मसीही है जिसको पवित्र शास्त्र के किताबों में आने का मौका मिला। अवश्य वह उस समय का एक चिकित्सक था और एक शिष्य और पौलूस के धर्मप्रचार की यात्रा में एक साथी। लूका के सुसमाचार का लेखक होने के नाते, उसने सब मिलाकर ३५ दृष्टान्त लिखे, उसमें से १९ सिर्फ उसीके सुसमाचार में लिखे हैं। लूका प्रभु के ६चमत्कारों का उल्लेख करता है जो और कोई नहीं करता। यदि पवित्र आत्मा लूका को लिखने के लिये कभी प्रेरणा नहीं देता, तो अच्छे सामरी, धनी मूर्ख, खोया हुआ पुत्र और धनी व्यक्ति और लाजरस के बारे में हमें कभी भी पता नहीं चलता।

प्रेरित की किताब सुसमाचारों में और पत्रियों में एक आवश्यक कड़ी को जोड़ता है। बिना प्रेरित के किताब के हमें यह कभी भी पता नहीं चलता कि नए नियम के समय कैसे कलीसियाएं (रोमी, कुरीन्थ, गलाती...)कैसे बनीं।

प्रेरित की किताब में ३ "हम" भाग हैं, (**प्रेरित 16:10-40**, **प्रेरित 20:5-21**,**प्रेरित 27:1-28**)। यह वो अनुछेद हैं जहाँ लूका वर्णन में अपने आपको जोड़ता है क्योंकि वह पौलूस के धर्मप्रचार यात्राओं में उसके साथ था।

संकल्प:

1. लूका ने अपने चिकित्सक प्रशिक्षण और अपने धर्मप्रचारक योग्यता का उपयोग सुसमाचार के विकास में एक औजार के रूप में किया। इसका उपयोग वह अपना भविष्य संवारने के लिये कर सकता था, लेकिन हम देखते हैं कि उसका हृदय परमेश्वर के कार्य में था।

2. हम कहीं भी यह नहीं दिखाई देता कि लूका अपने ऊपर ध्यान दिलाना चाहता हो, लेकिन इसके बजाए यीशु को और पवित्र आत्मा के कामों को महिमा देता है।

3. अपने मित्र पौलूस के प्रति उसने अपनी वफादारी का प्रदर्शन किया। पौलूस के सबसे बुरे समय में जब सब उसको छोड़कर चले गए वह उसके साथ बना रहा (**2तीमू.4:11**)। इस प्रकार के समयों से गुजरते वक्त (**2कुरि.11:23-27**) एक सहकर्मी और एक वफादार दोस्त के लिये कितनी बार पौलूस ने परमेश्वर का धन्यवाद किया होगा।

4. पौलूस की मिनिस्ट्री में लूका एक सहकर्मी के रूप में सक्रियता से काम कर रहा था (**कुलु.4:14**, **फिलेमोन 24**) और लिखने की अपने व्यक्तिगत कला का उपयोग प्रभावशाली रूप से अनेकों के दिलों छूने और उनपर प्रभाव डालने में किया। लूका के सुसमाचार और प्रेरित की किताब ने न सिर्फ जीवन बदले बल्कि यीशु के शरीर का सारी दुनिया में विकास किया।

5. लूका प्रभु के अगुवेपन के अधिन था। जहाँ भी प्रभु उसे ले जाए वो जाने के लिये तैयार था।

उपयोग:

1. क्या हम हमारी योग्यताओं और प्रतिभाओं को जानते हैं जिसके द्वारा परमेश्वर ने हमें आशिष दिया है?
आओ हम उसकी सूचि बनाएं और उसका उपयोग परमेश्वर की महिमा और उसकी कलीसिया के लिये करें।

2. लूका की उपस्थिती पौलूस के लिये एक महान प्रोत्साहन की बात थी। क्या हम निर्णय बनाकर अपने धार्मिक सलाहकार के साथ अपने रिश्ते को विकसित करें ताकि हम एक साथ मिलकर कुछ ऐसा काम करें जो परमेश्वर के नाम को महिमा लाए?

दिन 30 - उनेसिमुस - बड़े काम का

30-01-2016

फिलेमोन 10,11

पौलूस ने यह पत्र फिलेमोन को लिखा कि पहले भागे हुए गुलाम का फिर से परिचय दे-उनेसिमुस (अर्थात् बड़े काम का)। कहा जाता है कि उन दिनों रोमी साम्राज्य में ६ करोड़ गुलाम थे। और वो जो अपने स्वामी से बचकर भागे थे उनके साथ निर्दयतापूर्ण व्यवहार किया जाता था-जैसे उनके माथे पर तपते हुए लोहे से निशान बनाना या उससे भी बद्तर, मरने के लिये क्रूस पर लटकाना। जब पौलूस रोमी सरकार के कैद में था तब भाग्यवश उनेसिमुस उस तक पहूँच पाया और इसके कारण उसका जीवन बदल गया। यीशु का शिष्य होने के नाते अपने नाम के मुताबिक वह "बड़े काम का" साबित हुआ (**व.11**)।

बेकार अतीत: परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने गुलामों के साथ अच्छा बर्ताव करने की आज्ञा दी और जो अच्छे थे उनका आदर किया जाता था। परन्तु यहाँ उनेसिमुस की स्थिती बुरी थी। शायद चोरी (**वचन 18-19** के अनुसार), आलसी (**व.** 11) और इन सबसे ऊपर अपने स्वामी से धोका देकर भाग जाना। इस गुलाम के बारे में फिलेमोन यदि कुछ सोच सकता तो वो था कड़ी से कड़ी सजा।

ओह; परन्तु जब उनेसिमुस को यीशु के नाम में अपना जीवन बदलने का मौका मिला उसने उस मौके को कस के पकड़ लिया! आप अपने अतीत में कितना जीते हैं (**यशायाह 43:18**)? क्या आपको लगता है कि पौलूस के समान कोई आपके जीवन में भी है जो आपके बेकार अतीत को अनमोल भविष्य में बदल सकता है? बदलने के लिये आप कितने तैयार हैं?

बहुमूल्य जीवन: उनेसिमुस अभी-अभी मिली अपनी आज़ादी, जो कि गलत तरीके से हासिल की थी और रोमी राज्य का आराम छोड़, लौटकर अपने गांव और अपने स्वामी के पास जाना चाहता था ताकि बातों को सुलझा सके। यह भारी जोखिम से भरा था, वचनों के अनुसार बहुत साहसी। (**मत्ती 5:9**)

इस कहानी में दूसरा गुमनाम नायक है फिलेमोन, जो अपनी चोट और अपने अधिकार को भूलने के लिये, और अपने भगौड़े गुलाम उनेसिमुस को एक प्रिय भाई के रूप में अपनाने के लिये तैयार था। फिलेमोन से सिर्फ अपने गुनहगार को क्षमा करने की ही अपेक्षा नहीं की गई परन्तु इस बुरे व्यक्ति को अपनाने की आज्ञा भी दी गई थी। क्या आपको ऐसा लगता है कि उन दोनों के लिये ये करना आसान रहा होगा?

इनकी तरह कलीसिया में आज भी गुमनाम नायक हैं जो अपना ध्यान दृढ़ता से यीशु को महिमा देने और आत्माओं को बचाने में लगातार संघर्ष करने में लगाते और अपने गुनहगार को क्षमा करते और चोट को भूल जाते हैं।

मुझे लगता है आनेवाले दिनों में, सताव जो कलीसिया को नष्ट कर देता है वह कलीसिया के अन्दर से ही अनसुलझाए रिश्तों, मन मुटाव और चोटों के कारण आएगा। क्या आपके मन में ऐसी कोई बात है? क्या आपको लगता है कि यह पहले से ही आपको बर्बाद कर रहा है? आपके पास मदद के लिये कौन है?

आओ हम सच्चे साहस और संकल्प के साथ सच्चे नायक बनें-जो सूरज ढलने से पहले धार्मिकता से बातों को निपटाने में जो भी करना पड़े करने के लिये तैयार हों, ताकि कलीसिया महिमावान् बने। (**इफि.4:26**)

31-01-2016

दिन 31 - इपफ्रुदीतुस - फिलिप्पियों 2:25-30, 4:18

एक सेवाटहल करनेवाला जिसने अपनी जान जोखिम में डाली

पवित्र शास्त्र के इतिहास में इपफ्रुदीतुस ने एक महत्वपूर्ण भुमिका निभाई, उसका नाम तुरन्त पहचान में न आने के बावजूद। फिलिप्पियों की पत्री जो पौलूस ने बन्दीगृह में लिखा था; में दो बार उसके इस नाम का उल्लेख किया

गया है। इपफ्रुदीतुस वह था जिसने मूल हस्तलिपी को उसके सही हकदार- फिलिप्पी कलीसिया को पहुँचाया था।

पौलूस रोम में गृहकैद में था और फिलिप्पी की कलीसिया उसके लिये कुछ भेजना चाहती थी, जिसे हम शायद एक, "उपहार" कह सकते हैं। पौलूस इन उपहारों का वर्णन एक ग्रहण योग्य बलि के रूप में करता है जो परमेश्वर को भाता है। फिलिप्पी के विश्वासियों ने बहुत सारी वस्तुएं जमा कर उसे अपने ही एक व्यक्ति जिसका नाम इपफ्रुदीतुस के हाथों रोम में पौलूस को भेजा।

अपनी कलीसिया से मिले उपहार को इपफ्रुदीतुस ने पूरे भरोसे के साथ पहुँचाया और फिर अपने कर्तव्य से बढ़ चढ़कर काम किया। निस्वार्थ रूप से पौलूस की सेवा और दूसरे कामों द्वारा प्रभु की सेवा करने में अपना कर्तव्य निभाता इपफ्रुदीतुस गंभीर रूप से बीमार हो गया, यहाँ तक बीमार कि मरने पर था। परमेश्वर ने अनुग्रह के द्वारा उसे स्वस्थ किया और पौलूस ने हाल ही में लिखे फिलिप्पियों की किताब को अपने मित्र के हाथों में देकर उसे वापस घर भेजा।

फिलिप्पियों के लिये इपफ्रुदीतुस एक संदेशवाहक था जिसने कुछ सामान पहुँचाया। लेकिन पौलूस के लिये वो इससे बहुत बढ़कर था: एक "भाई" (एक ही परिवार से), एक "सहकर्मी" (एक ही मकसद के लिये मेहनत करते), और एक "साथी सैनिक" (समान परिक्षाओं से गुजरते)।

इपफ्रुदीतुस एक स्पष्ट निष्ठा, विश्वास और आत्मत्याग वाला पुरूष था। उसने खुद से पहले "दूसरों के हित" के बारे में सोचा, और ऐसा करके यीशु जैसा हृदय दर्शाया। (**फिलिप्पियों 2:4-5**)।

पौलूस की जगह उसने मेहनत की यहाँ तक कि वह बीमार हो गया, और बीमार होने के बावजूद भी उसने अपनी चिन्ता नहीं की; बल्कि जब उसकी कलीसिया को उसके बीमार होने का पता चला तो वह बहुत दु:खी हुआ क्योंकि वह नहीं चाहता था कि उसके लिये उसकी कलीसिया चिन्तीत हो।

इस पत्र के अन्त में पौलूस फिर से इपफ्रुदीतुस का उल्लेख करता है: **"मेरे पास सब कुछ है, बल्कि प्रचुर मात्रा में है। जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं, उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ। वे वस्तुएं सुगन्धमय,ग्रहण योग्य बलि है, जो परमेश्वर को पसन्द आती हैं" फिलिप्पियों 4:18**। और तुरन्त दूसरा वचन परमेश्वर की प्रतिज्ञा जो अक्सर बताया जाता है कि जो परमेश्वर को पहला स्थान देते हैं परमेश्वर उनकी सुधि लेता है: **"मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी हर एक आवश्यकता को पूरी करेगा"**।

इपफ्रुदीतुस की तरह, जब स्त्री पुरूष पूर्णत: अपने को परमेश्वर के राज्य के लिये सौंप देते हैं, बहुत से लोगों को लाभ मिलता है। इस प्रकार का व्यक्ति आदर के योग्य है और उसकी उपस्थीती आनन्द का कारण है।

हमारे आज के शांत समय में ध्यान देने वाले कुछ प्रश्न:

पौलूस इपफ्रुदीतुस को एक साथी सैनिक और सहकर्मी कहकर बुलाता है। कलीसिया में आप किस नाम से जाने जाते हैं?

पौलूस की मदद करने के लिये इपफ्रुदीतुस ने अपना जीवन खतरे में डाला। आप किस तरह से परमेश्वर की मिनिस्ट्री और उसके काम करने वालों को मदद कर रहे हो, बावजूद इसके कि यह करने में आपको परेशानी झेलना पड़ रहा है?

हम याद रखें - इपफ्रुदीतुस ने कुछ भी अपनी पहचान या महिमा के लिये नहीं परन्तु मसीह की महिमा के लिये किया। तो हमें भी यही ऐसा ही होना चाहिये।

मनन के लिये आगे पढ़ें: **फिलिप्पियों 2:14, कुलुस्सियों 3:17, 23-24**